मासिक

कुमावत इंडिया

कुमावत प्रगति ट्रस्ट की सामाजिक पत्रिका

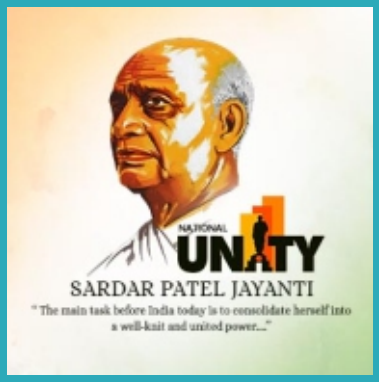
Email : kumawatindiapatrika@gmail.com

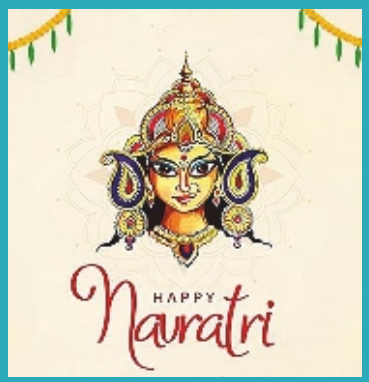
Website : www.kumawatindiapatrika.in

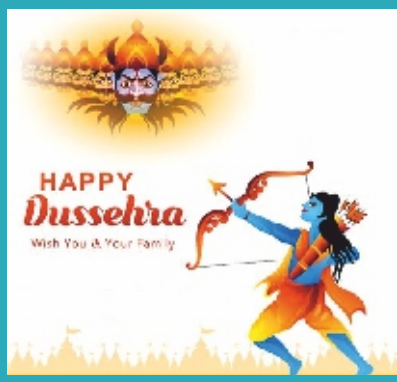
वर्ष-10 | अंक-02 सितम्बर 2026 पृष्ठ-32 मूल्य : ₹ 20.00













DPS AJMER

Sr. Sec. School

Tabiji Farm Road, Ajmer



ESTABLISHING

The Right Environment

We believe in building a modern culture using both traditional & next-generation tools. So, your child's natural talents can blossom.



SHASHI PAL KUMAWAT
Chairman

Our Activities

Archery & International
Level Shooting Range



Swimming Pool
"DPS Wave Pulse"



Horse Riding Club
Won Laurels at the National Level



Skating Rink





Karate Club
We have won Karate Championship at District, State & National Level.



Art & Craft



Tabiji Farm Road, Near D.D. Puram, Beawar Road, Ajmer

Web: www.dpsajmer.in E-Mail: info@dpsajmer.in

कुमावत प्रगति ट्रस्ट

पता : एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प., दुर्गापुरा, जयपुर-302018

संरक्षक	:	जयकिशन सोकिल	मो. 9829125428
अध्यक्ष	:	रामप्रकाश कुमावत एडवोकेट	मो. 9887440666
उपाध्यक्ष	:	रामप्रकाश कुमावत (मारवाल)	मो. 9414074376
सचिव	:	श्रीमती भारती तोंदवाल	मो. 9414810584
कोषाध्यक्ष	:	लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल	मो. 9549656438
सदस्य ट्रस्टी	:	सी.एम. कुमावत (बड़ीवाल)	मो. 9829056063
		रमेश कुमावत (गेदर)	मो. 9414554322
		चेतन बालोदिया	मो. 9414052736
मुख्य सलाहकार	:	सुरेन्द्र कुमार वर्मा (नागा)	मो. 9414994006
सलाहकार	:	गिरधारी लाल सिंघनवाल	मो. 9414263429

सम्पादक मण्डल : रमेश चन्द कुमावत (गैदर) सम्पादक - 9414554322, **सह-सम्पादक :** रमेश तोंदवाल 9460870125 एवं प्रिया मारवाल 9408093778, लक्ष्मीनारायण सिरस्वा 9829791846, उर्वशी बालोदिया 9351680888, **पदेन सदस्य :** अध्यक्ष, सचिव एवं प्रकाशक।

व्यवस्थापक मण्डल : महेश चन्द जलान्धरा 9828118789, लालचन्द धुंधारिया 9413335998, सुरेन्द्र मारोठिया 9314820385, राजेश धुंधारिया 9314506330, राजेश कुमावत (मरोडिया) 9829097496, अशोक कुमावत -9352070394, श्रीमती शशि कला बालोदिया, मुकेश कारगवाल 9828606056 व राजसिंह बधानिया 9414238799 **उप-कोषाध्यक्ष :** खेमचंद खड़गटा 9829140629 **विधि सलाहकार :** विशेष आमंत्रित सदस्य : मनोज सिरस्वा।

पत्रिका सहयोगी :

छत्तीसगढ़ : रमेश कुमार तुनवाल **मो. 9425234397 दिल्ली :** राधेश्याम घासोलिया **मो. 9818711580 सूरत :** शुभकरण किरोड़ीवाल **मो. 9898097444 वापी :** कृष्णगोपाल **मो. 9824892299 मुम्बई :** विजय किरोड़ीवाल, **मो. 9867177188 जींद (हरियाणा) :** बलवीर सिंह वर्मा **मो. 9355322301 उदयपुर :** घनश्याम पटवा **मो. 9460913044,** जगदीश मामोडिया **मो. 9024805687 ब्यावर :** नरेन्द्र आर्य **मो. 8107944493,** रवि बेडवाल **मो. 8290303003 बगरू :** चेनसुख बड़ीवाल **मो. 9929012957 सांगानेर :** सोहनलाल अजमेरा **मो. 9636860812 इंदौर :** नेमीचंद कारवाल **मो. 9993998645 किशनगढ़ :** प्रभुदयाल तुनगरिया **9680931428**

प्रोसेसिंग व मुद्रक : राज ब्लॉक्स, 22 गोदाम, जयपुर

सदस्यता शुल्क रु. : विशिष्ठ संरक्षक- 5000, संरक्षक-3000, 10 वर्षीय-1300 एवं 5 वर्षीय-650

विज्ञापन दरें : अंतिम कवर पृष्ठ-3500, कवर पृष्ठ अन्दर, 3000, अन्दर 1 पृष्ठ-2500, 1/2 पृष्ठ-1300, 1/4 पृष्ठ-700

नोट 1 : संरक्षक सदस्य को आजीवन (25 वर्ष) तक पत्रिका प्रेषित व 1 बार मय फोटो परिचय प्रकाशन, विशिष्ठ संरक्षक का आजीवन पत्रिका व प्रत्येक अंक में 10 वर्ष तक नाम का प्रकाशन।

नोट 2. 12 विज्ञापन निरन्तर देने पर 2 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किये जायेंगे। 6 विज्ञापन निरन्तर देने पर 1 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किया जायेगा।

बैंक खाता : कुमावत प्रगति ट्रस्ट, संख्या 13850110020562 यूको बैंक, गांधी सर्किल, जयपुर, IFS Code : UCBA0001385

यदि राशि सीधे बैंक खाते में स्लिप/ऑनलाइन जमा कराई गई है तो कृपया व्हाट्सएप नं. 9549656438 पर रसीद प्रेषित करें।

स्वत्वाधिकार : कुमावत प्रगति ट्रस्ट के लिए प्रकाशक, मुद्रक सी.एम. कुमावत द्वारा राज ब्लॉक्स, बी-81, करतारपुरा इण्डस्ट्रीयल एरिया, 22 गोदाम, जयपुर से मुद्रित एवं एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प., दुर्गापुरा, जयपुर-302018 से प्रकाशित, सम्पादक रमेश चंद कुमावत।

सम्पादकीय



गांधी जयंती और नवरात्री का पावन पर्व आने वाला है। हम अब घरों की साफ-सफाई भी करेंगे ताकि आगामी दिपावली पर सब कुछ अच्छा दिखे। महात्मा गांधी ने हमें स्वच्छता का संदेश दिया था और नवरात्री पर्व हमें पवित्रता का संदेश देते हैं। स्वच्छता और पवित्रता होगी तो पर्व मनाने का आनन्द बढ़ जाता है। पर घर की स्वच्छता के साथ हमें मन की स्वच्छता पर भी ध्यान देना चाहिये तथा मन से अहंकार, क्रोध, लोभ, लालच, ईर्ष्या, द्वेष जैसी बुराइयों को हटाना चाहिए। काश मन को रीसेट करने का बटन होता तो यह काम आसान होता, पर ऐसा नहीं है। इसलिए यह स्वच्छता हमें ही करनी होगी। फिर देखिये कि आप में धैर्य, विश्वास, सम्मान, संस्कार, विवेक जैसे गुण स्वत: ही आयेंगे जो हमारे व्यक्तित्व में निखार लाने वाले होते हैं।

1 अक्टूबर को **अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस** है। हमारी संस्कृति में बुजुर्गों को परिवार एवं समाज की रीढ़ माना गया है। उनके अनुभव का लाभ हम सभी को उठाना चाहिए। आईये, हम उनके बहुमूल्य योगदान को स्वीकार कर उन्हें सम्मान दें और कृतज्ञता प्रकट करें। हम उन्हें अकेला न छोड़े तथा उनके स्वास्थ्य का ख्याल रखें।

इस बार 2 अक्टूबर को **विश्व मुस्कान दिवस** है। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में लोग मुस्कुराना ही भूल गये हैं। हमें अपने व्यस्त समय और चिंताओं से हटकर कुछ समय स्वयं मुस्कुराने और दूसरों के जीवन में खुशियां बिखेरने का प्रयास करना चाहिये। इस दिन गांधीजी एवं लाल बहादुर शास्त्री जी की जयंती भी है। हमें उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारना चाहिए।

सनातन धर्म के सबसे पवित्र दिन **नवरात्र** के माने गये हैं। इन नौ दिनों में माँ दुर्गा की पूजा के साथ खान-पान की पवित्रता एवं व्रत से हमारा मन एवं तन निर्मल होता है। **विजयादशमी** का दिन बुराई पर अच्छाई का दिन है। यह दिन हमें बुराइयों के त्याग और अच्छाइयों को अपनाने को प्रेरित करता है।

हमें अपने त्योहारों के पीछे छिपी हुई भावनाओं को समझना होगा, त्यौंहारों पर हमारा मिलना-जुलना होता है जो आपसी सहयोग, सद्भाव एवं एकता को बढ़ाता है। इससे हमारे चरित्र का विकास होता है और जीवन सरल, सुखद एवं समृद्ध होता है। आप सभी को **नवरात्र** एवं **विजयदशमी** की हार्दिक शुभकामनाएं।

हाल ही में नगरीय निकायों के चुनावों में कुमावत समाज के अनेक पार्षद विजयी हुए हैं तथा उनमें से कुछ सभापति तथा उप सभापति पद पर सुशोभित हुए हैं। इन सभी को **हार्दिक बधाई।**

- रमेश कुमावत (गैदर)

हमारी वेवबसाइट www.kumawatindiapatrika.in पर आप 'कुमावत इंडिया' पत्रिका के पिछले अंक व अन्य विवरण देख सकते हैं।

सम्पादकीय	3
कुमावत गौरव : श्री मनोज कुमावत	5
डॉ. कमलेश कुमावत को युवा शोधकर्ता सम्मान	5
भावेश और पुलकेश बने लेफ्टिनेंट	5
नगरीय निकाय चुनावों में बने सभापति (चेयरमैन) को हार्दिक बधाई	6
नगर निकाय चुनावों में विभिन्न जगहों से विजयी कुमावत उम्मीदवारों को बधाई	7
डॉ. गरिमा कुमावत की Australian War College में उत्कृष्ट प्रस्तुति	7
मिस्र में डॉ. चिन्मय पण्ड्या को मिला प्रतिष्ठित 'Cairo Shield' सम्मान	7
पारस टिक्कू ने बधिरों के लिए बनाई मशीन	8
कुमावत समाज देवास का जिलाध्यक्ष डॉ मारु को बनाया	8
हनुमान अंश फिल्म की अप्रत्याशित सफलता	8
ममता बनी सहायक आचार्य	8
कविता ने यूजीसी-नेट उत्तीर्ण किया	8
अमिष प्रताप बालोदिया सम्मानित	9
सृष्टि कुमावत ने राजस्थानी गीत 'थिरक-थिरक' में बिखेरा हुनर	9
पुण्यतिथि को बनाया जनसेवा का संकल्प	9
पेरिस में बने अक्षरधाम मंदिर का शुभारम्भ	10
पवन कुमावत ने फिर रखा तिरंगे का मान	10
विश्व मुस्कान दिवस: एक छोटी सी मुस्कान का बड़ा प्रभाव	11
रायला के राधेश्याम कुमावत को राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ शोधकर्ता पुरस्कार	11
34वां मास्टर भौंरीलाल वर्मा स्मृति व्याख्यान एवं प्रतिभा सम्मान समारोह	12
धार्मिक आस्था से संबंधित नियम	13
गांधी जयंती: सत्य, अहिंसा और आदर्शों का पर्व	14
केबीसी में कृष्ण ने जीते 50 लाख	14
लाल बहादुर शास्त्री जयंती: सादगी, निष्ठा और दृढ़ संकल्प का अमर प्रतीक	15
उदयपुर के डॉ गौरव कुमावत (टांक) ने वियतनाम में आयोजित किया अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन	15
नवरात्रि के नौ दिन: माँ दुर्गा के नौ स्वरूपों में छिपी जीवन की अनमोल सीख	16
विजया दशमी	17
नवरात्रा स्थापना: शक्ति आराधना से कुलदेवी परंपरा तक	18
करवा चौथ	19
दीपावली से पहले कैसे करें घर की सफ़ाई	20
रावण से लक्ष्मण ने नीति की शिक्षा ली	20
भारत में एकीकरण के शिल्पकार : सरदार पटेल	21
कुराड़ा की कौशल्या ने नेट क्रैक की	21
अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस: समाज के शिल्पकारों का सम्मान और हमारी नैतिक जिम्मेदारी	22
विशिष्ट संरक्षक सूची व श्रद्धांजलि	24
विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची	25
पत्रिका नहीं मिलने पर सम्पर्क करें	26

Dal® design academy
beyond imagination

INDUSTRY ORIENTED
PROFESSIONAL JEWELLERY COURSE



DR. KAMLESH DAL
8239200090



SUBHASH CHAND DAL
9829600090

Courses Offered

- Diploma in Jewellery Design - 1 Year
- Basic Manual Jewellery Design - 5 Months
- Basic Certificate in 3D-CAD - 3 Months
- Advance Certificate in 3D-CAD - 6 Months
- Professional Certificate in 3D-CAD - 9 Months







DAL DESIGN ACADEMY
Plot No. 20, Rishi Colony, Near Gandhi Nagar Station Gate-2,
Tonk Road, Jaipur, Rajasthan 302015 Mobile: 8239200090
www.daldesignacademy.com

श्री मनोज कुमावत

विला 105, कृष्णा कुंज विला, कालवाड़ रोड, जयपुर-302012



श्रीमती विमला-श्री शंकर लाल सिंघनवाल के 4 नवम्बर 1989 को एक पुत्र रत्न ने जन्म लिया, जिसका नाम रखा गया मनोज। श्री मनोज कुमावत बाल्यकाल से ही प्रखर बुद्धि के थे। उन्होंने सिविल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा किया है। इसके बाद वर्ष 2013 से अनेक राज्यों में टोपोग्राफिकल सर्वे, DGPS सर्वे एवं जियोलोजिकल ड्रोन सर्वे जैसा उच्च तकनीक एवं दक्षता का कार्य अपने मित्र श्री विनोद कुमावत (खनगवाल) के साथ **Global Earth Engineering Services Pvt. Ltd.** कम्पनी बनाकर प्रारम्भ किया। इसके तहत रोड माईनिंग तथा वाटर सप्लाई सर्वे की अनेक प्रोजेक्ट रिपोर्ट्स तैयार करने का कार्य किया जाता है। इन्होंने चम्बल-धौलपुर-भरतपुर वाटर सप्लाई प्रोजेक्ट, बीसलपुर-केकड़ी वाटर सप्लाई प्रोजेक्ट, केन्द्रपाड़ा एवं मयूरगंज वाटर सप्लाई प्रोजेक्ट उड़ीसा, मानसरोवर के JDA के अनेक रोड जंक्शन प्रोजेक्ट आदि का कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न किए हैं।

कार्य के विस्तार के बाद इन्होंने वर्ष 2025 में **Sky Force Engineers** के नाम से एक भागीदारी फर्म श्री विनोद कुमावत एवं श्री रामप्रकाश कुमावत के साथ प्रारम्भ की है जिसमें एडवांस सर्वे सोल्यूशन देने का कार्य नवीनतम तकनीकी उपकरणों से किया जाता है। श्री मनोज कुमावत दूरदर्शी, सरल तथा सौम्य व्यक्तित्व के धनी हैं तथा इनके नेतृत्व में टीम अपना कार्य सफलता से कर पाती है। ये सामाजिक कार्यों में भी अग्रणीय रहते हैं।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका परिवार श्री मनोज कुमावत के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

डॉ. कमलेश कुमावत को युवा शोधकर्ता सम्मान



जयपुर। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, विशेष रूप से कंप्यूटर विज्ञान एवं सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय शोध एवं योगदान के लिए डॉ. कमलेश कुमावत को युवा शोधकर्ता सम्मान-2026 से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उनके शोध कार्य, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा तकनीकी नवाचार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए प्रदान किया गया।

यह सम्मान विशेषज्ञ अनुप्रयोग एवं सुरक्षा में उभरती प्रवृत्तियों पर आयोजित चौथे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन (ICE-TEAS 2026) के दौरान प्रदान किया गया। सम्मेलन का आयोजन एपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर में 12 सितंबर 2026 को किया गया।

डॉ. कमलेश कुमावत के शोध कार्यों में कंप्यूटर विज्ञान एवं सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से नवीन तकनीकी समाधानों के विकास पर विशेष ध्यान दिया गया है। उनके शोध एवं वैज्ञानिक योगदान को देखते हुए उन्हें यह प्रतिष्ठित सम्मान प्रदान किया गया।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से डॉ. कमलेश कुमावत को Ph.D. पूर्ण करने पर **बधाई एवं शुभकामनाएं।**

भावेश और पुलकेश बने लेफ्टिनेंट



किशनगढ़-रेनवाल क्षेत्र, मण्ढा भीमसिंह गांव के निवासी दो सगे भाइयों भावेश कुमावत एवं पुलकेश कुमावत ने भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट बनकर कुमावत समाज का नाम गौरवान्वित किया है। चेन्नई स्थित ऑफिसर्स ट्रेनिंग एकेडमी (OTA) से सैन्य प्रशिक्षण पूर्ण करने के बाद पुलकेश कुमावत को AAD (Army Air Defence) तथा भावेश कुमावत को आर्मर्ड कोर में पोस्टिंग मिली है।

इनके पिता सूखाराम कुमावत व्यवसायी हैं, तथा माता रेखा कुमावत गृहिणी हैं। परिवार साधारण एवं संघर्षशील है। कड़ी मेहनत, दृढ़ संकल्प और माता-पिता के संस्कारों के दम पर सीमित संसाधनों के बावजूद दोनों बेटों ने शिक्षा और उनके सपनों को पूरा करने में कोई कमी नहीं आने दी। परिवार के बुजुर्ग दादा गोवर्धन लाल कुमावत के संस्कारों और आशीर्वाद ने भी दोनों भाइयों के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दोनों भाइयों ने जयपुर के पैरामाउंट स्कूल से कक्षा 10वीं एवं 12वीं तक की शिक्षा प्राप्त की। बचपन से ही अनुशासन, मेहनत और लक्ष्य के प्रति समर्पण को जीवन का हिस्सा बनाते हुए दोनों भाइयों ने सेना में अधिकारी बनने का सपना देखा और उसे अपनी मेहनत से साकार कर दिखाया।

बहुत-बहुत बधाई।

नगरीय निकाय चुनावों में बने सभापति (चेयरमैन) को हार्दिक बधाई



नरेश कुमावत
नगरपालिका पलसाना



ओमप्रकाश कुमावत
नगरपालिका अजीतगढ़



भंवरलाल चेजारा
नगरपालिका दांता



सुरेश बागरेचा
नगरपालिका आहोर



लोकेश लंबा
नगरपालिका पीसांगन



कविता कुमावत
नगरपालिका नावां सिटी



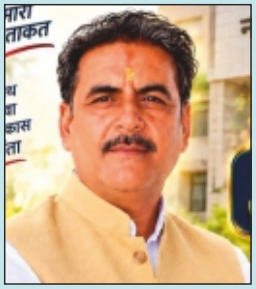
उर्मिला कुमावत
नगरपालिका कालाडेरा



चंद्र मोहन डाल
नगरपालिका लूनकरणसर

आप सभी जन सेवा के उच्च मापदण्ड स्थापित करें जिससे आगामी चुनावों में समाज के लोगों को और अधिक टिकिट मिल सके।

नगरीय निकाय चुनावों में बने उपसभापति को बधाई



ओम प्रकाश कुमावत
नगरपालिका दांता



मोहन कुमावत
नगरपालिका राजसमन्द



प्रदीप कुमावत
नगरपालिका पीसांगन

QCI & NCVT भारत सरकार से मान्यता प्राप्त

स्वाभिमान ITI

Industrial Training Institute

जयसिंहपुरा जयपुर (राज.)



मोहित कुमावत



प्रवेश प्रारम्भ
प्रथम 10 रजिस्ट्रेशन पर 50% छूट
सीमित सीटें
छात्रावास सुविधा उपलब्ध
100% परिणाम



रामपाल कुमावत

ट्रेड इलेक्ट्रिशियन

निःशुल्क कम्प्यूटर कोर्स सभी के लिए

SC/ST/SBC (OBC+BPL) अल्पसंख्यक छात्र-छात्राओं को राज्य सरकार द्वारा छात्रवृत्ति

अजमेर रोड, भांकरोटा, रमाडा होटल के सामने, जयसिंहपुरा, जयपुर
8949324622, 9829199589

नगर निकाय चुनावों में विभिन्न जगहों से विजयी कुमावत उम्मीदवारों को बधाई

राजसमन्द : वार्ड 1- चैतन्य कुमार, भाजपा, वार्ड 9- चम्पालाल कुमावत, भाजपा, वार्ड 10- दीपिका कुमावत, भाजपा, वार्ड 12 - मोहनलाल कुमावत, कांग्रेस, वार्ड 14- खुश कमल कुमावत, भाजपा, वार्ड 15- श्रीमती सुलोचना कुमावत, भाजपा, वार्ड 18- हरीश कुमावत, भाजपा, वार्ड 23- ललिता कुमावत, भाजपा, वार्ड 24- छगनलाल कुमावत, कांग्रेस, वार्ड 25-भूरालाल कुमावत, कांग्रेस, वार्ड 32- मोहनलाल कुमावत, भाजपा, वार्ड 45- दिनेश कुमावत, भाजपा

खेतड़ी : वार्ड 12- पारस कुमावत, वार्ड 13-किरण बाला कुमावत,

निम्बाहेडा : वार्ड 7- कृष्णा कुमावत, भाजपा

दांता : वार्ड 13- ओम प्रकाश कुमावत, वार्ड 6- राजेश चेजारा, भाजपा

रिंगस : वार्ड 11-नरेन्द्र कुमावत, वार्ड 18-तारा देवी कुमावत, वार्ड 25-मुकेश कुमावत, वार्ड 27-तेजपाल कुमावत, वार्ड 30-विशाखा कुमावत, भाजपा, वार्ड 31-सुभाष कुमावत, वार्ड 32- अशोक कुमावत

किशनगढ़ रेनवाल : वार्ड 2- मामराज कुमावत, वार्ड 8- सीताराम कुमावत, वार्ड 12- राजेन्द्र कुमावत, वार्ड 13- विजय कुमावत, वार्ड 28- कौशल्या देवी कुमावत, वार्ड 29-सीता देवी कुमावत, वार्ड 30- ताराचन्द कुमावत, वार्ड 31- लाल चन्द कुमावत, वार्ड 32- बोदू राम कुमावत

खाटूश्यामजी : वार्ड 5-सुनीता कुमारी, भाजपा

पलसाना : वार्ड 9-नरेश कुमार कुमावत, भाजपा

कालाडेरा : उर्मिला कुमावत, भाजपा

बूंदी : वार्ड 30-ललिता कुमावत, कांग्रेस

श्रीगंगानगर : वार्ड 48-रामरतन घोड़ेला,

मालपुरा : वार्ड 34-बाबूलाल कुमावत,

कुचामन : वार्ड 1-मोहिनी कुमावत, निर्दलीय, वार्ड 6- भागीरथ कुमावत, भाजपा, वार्ड 12-दिनदयाल कुमावत, कांग्रेस, वार्ड 14- डालूराम कुमावत, भाजपा, वार्ड 16- विक्रम राजोरिया, भाजपा, वार्ड 18- बाबूलाल कुमावत, भाजपा, वार्ड 19-गीता कुमावत, निर्दलीय, वार्ड 21- राजकुमार फौजी, भाजपा, वार्ड 23- पुष्पा कुमावत, निर्दलीय, वार्ड 34- ओम प्रकाश कुमावत, कांग्रेस, वार्ड 42-राजूराम कुमावत, निर्दलीय, वार्ड 43-किशन कुमावत, निर्दलीय, वार्ड 44-नीतू कुमावत, भाजपा, वार्ड 45-लक्ष्मण राम कुमावत, निर्दलीय

चौमूं : वार्ड 1- मनोज कुमार कुमावत, भाजपा, वार्ड 17- राकेश कुमावत, कांग्रेस, वार्ड 11- अनिता कुमावत, भाजपा, वार्ड 19-बजरंग लाल कुमावत, भाजपा, वार्ड 22- संदीप कुमावत, भाजपा, वार्ड 16- किरण देवी कुमावत, कांग्रेस

फुलेरा : वार्ड 5- पवन कुमार कुमावत, भाजपा, वार्ड 11-प्रभुदयाल कुमावत, भाजपा

डॉ. गरिमा कुमावत की Australian War College में उत्कृष्ट प्रस्तुति

डॉ. गरिमा कुमावत ने भारत का प्रभावी प्रतिनिधित्व करते हुए भारत-ऑस्ट्रेलिया संबंधों एवं भविष्य में विकास की संभावनाओं पर अपने महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए।



उन्होंने व्यापार, ऊर्जा, Rare Earth Elements, Critical Minerals, Cyber Security, Maritime Security और Space जैसे विषयों पर भारत के दृष्टिकोण को प्रभावशाली तरीके से रखा।

उनकी उत्कृष्ट प्रस्तुति एवं योगदान के Australian War College द्वारा उन्हें स्मृति चिह्न प्रदान किया गया।

इस उपलब्धि के लिए **डॉ. गरिमा कुमावत** को **हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।**

मिस्र में डॉ. चिन्मय पण्ड्या को मिला प्रतिष्ठित 'Cairo Shield' सम्मान

भारत-मिस्र शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक सहयोग की नई शुरुआत!

मिस्र में गायत्री परिवार के डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को प्रतिष्ठित 'Cairo Shield' सम्मान से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर British University in Egypt के साथ MoU भी हुआ, जो भारत और मिस्र के बीच शिक्षा, संस्कृति एवं ज्ञान-विनिमय को नई गति देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।



शिक्षा • संस्कृति • सहयोग • मैत्री भारत की ज्ञान-परंपरा और वैश्विक शैक्षणिक सहयोग की यह प्रेरणादायी पहल है।

भारत-मिस्र शैक्षणिक सहयोग से युवाओं को क्या नए अवसर मिल सकते हैं।

Created by Universal Document Converter

पारस टिक्कू ने बधिरों के लिए बनाई मशीन

दिल्ली के 15 वर्षीय कक्षा 10 के छात्र पारस टिक्कू ने तकनीक को सिर्फ सीखने तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे लोगों की जिंदगी आसान बनाने का जरिया बनाया है। उन्होंने Hear Bright नाम का एआई स्मार्ट-ग्लास प्रोटोटाइप तैयार किया है, जिसका उद्देश्य बधिर और कम सुनने वाले लोगों के लिए आसपास की आवाजों और बातचीत को दृश्य जानकारी में बदलना है।

पारस ने कक्षा 4 में कोडिंग सीखना शुरू किया था। समय के साथ उन्होंने वेब डेवलपमेंट, पायथन, कंप्यूटर विजन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सीखी। पिछले साल बधिर लोगों के सामने आने वाली संचार संबंधी चुनौतियों के बारे में जानने के बाद उन्होंने सोचा कि क्या तकनीक इस समस्या को कम कर सकती है।

Hear Bright में माइक्रोफोन बातचीत को टेक्स्ट में बदलकर चश्मे के डिस्प्ले पर दिखाता है। पारस इसमें भारतीय सांकेतिक भाषा और हाथ के इशारों को पहचानने की सुविधा भी विकसित कर रहे हैं। इसके अलावा अलार्म और सायरन जैसी महत्वपूर्ण आवाजों के लिए दृश्य संकेत देने की भी कोशिश की जा रही है।

प्रोटोटाइप में कैमरा, माइक्रोफोन, स्पीकर, डिस्प्ले, माइक्रोकंट्रोलर और 3D-प्रिंटेड फ्रेम जैसी तकनीकें शामिल हैं। पारस ने इसके लिए MediaPipe, TensorFlow.js और मशीन लर्निंग मॉडल का इस्तेमाल किया है।

इस परियोजना की सबसे बड़ी चुनौती हाथ के इशारों को अलग-अलग रोशनी, कोण और गति में सही पहचानना है। इसके लिए पारस लगातार डेटा जुटाकर मॉडल को बेहतर बना रहे हैं और वास्तविक उपयोगकर्ताओं से प्रतिक्रिया भी ले रहे हैं।

पारस, एलन मस्क से प्रेरित हैं और भविष्य में आईआईटी में पढ़ाई करके अपनी तकनीकी समझ को और मजबूत करना चाहते हैं। उनका मानना है कि तकनीक तभी सार्थक है, जब वह किसी वास्तविक समस्या को हल करके किसी की जिंदगी बेहतर बनाए।

कुमावत समाज देवास का जिलाध्यक्ष डॉ मारु को बनाया

देवास। कुमावत समाज देवास की बैठक में डॉ. मारु को जिलाध्यक्ष बनाया गया। बैठक में मुख्य अतिथि के रुप में कुमावत महासंघ, मध्यप्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष श्री शैलेंद्र जी जांगड़े उपस्थित रहे। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कुमावत क्षत्रिय महासभा, देवास के जिलाध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह कुमावत ने की। विशेष अतिथि के रुप में कुमावत समाज, मुसाखेडी के संरक्षक दिनेश कुमावत, अध्यक्ष ललित कुमावत एवं वरिष्ठ समाजसेवी मुरलीधर सलवाडीया उपस्थित रहे। सर्वप्रथम अतिथियों का पुष्पमाला एवं कुमावत महासभा के अंग वस्त्र पहना कर स्वागत किया गया। प्रदेश अध्यक्ष जांगड़े ने स्वजातीय बंधुओं को बताया कि कुमावत महासंघ का संकल्प है कि पूरे प्रदेश के सभी स्वजातीय बंधुओं को एकजुट करना तथा समाज को आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक एवं राजनैतिक दृष्टि से सक्षम बनाना है। बैठक में विचार-विमर्श के पश्चात कुमावत महासंघ, मध्यप्रदेश की देवास इकाई के जिलाध्यक्ष के लिए वरिष्ठ समाजसेवी एवं भारतीय मजदूर संघ, मध्यप्रदेश के पूर्व प्रदेश महामंत्री डॉ. लक्ष्मी नारायण मारु के नाम की सर्वानुमति से घोषणा की गई। उपस्थित स्वजातीय बंधुओं द्वारा जिलाध्यक्ष बनने पर डॉ मारु का पुष्प माला एवं अंग वस्त्र पहना कर स्वागत किया गया।

हनुमान अंश फिल्म की अप्रत्याशित सफलता

क्या कोई महज 21 साल की उम्र में स्वतंत्र फिल्म बनाकर बड़ा कमाल कर सकता है? इंग्लैंड में कार्यरत अनुप्रिया नागर ने ऐसा ही कर दिखाया है। उन्होंने अपनी निष्ठा और मेहनत से **'हनुमान अंश'** नामक फिल्म का निर्माण किया। विदेश में रहने के दौरान अनुप्रिया ने नीम करोली बाबा के जीवन दर्शन के बारे में पढ़ा। इससे प्रभावित होकर और संत प्रेमानंद महाराज जी के मार्गदर्शन में उन्होंने फिल्म बनाने का संकल्प लिया। सिर्फ 2 करोड़ रुपये के बजट में बनी यह फिल्म अप्रत्याशित ब्लॉकबस्टर साबित हुई। इस फिल्म ने 300 करोड रु से अधिक कमाई की है। यह सफलता दर्शाती है कि मजबूत संकल्प से सीमित संसाधनों में भी बड़ा मुकाम हासिल हो सकता है। आज की युवा पीढ़ी का अध्यात्म से जुड़कर ऐसी कहानियां सामने लाना बेहद प्रेरक है।



ममता बनी सहायक आचार्य



ममता कुमावत पुत्री श्री लालचंद जी कुमावत (राज. पुलिस) निवासी बेगस (बगरू) जिला जयपुर का सहायक आचार्य (इतिहास) के पद पर चयन होने पर हार्दिक बधाई।

कविता ने यूजीसी-नेट उत्तीर्ण किया



ग्राम जावला, नागौर की कविता कुमावत पुत्री श्री श्रवण राम द्वारा इतिहास विषय से प्रथम प्रयास में एनईटी नेट परीक्षा 94.16% अंकों से उत्तीर्ण कर असिस्टेंट प्रोफेसर व पीएचडी के लिए योग्यता हासिल की। हार्दिक बधाई।

Created by Universal Document Converter

अमिष प्रताप बालोदिया सम्मानित

मथुरा। केनरा बैंक के कर्मचारियों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में कर्मचारियों को आवश्यक कार्य संबंधी प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन प्रदान किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के सफल समापन के अवसर पर बैंक के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अमिष प्रताप बालोदिया का सम्मान किया।



कार्यक्रम के दौरान अमिष प्रताप बालोदिया ने बैंक कर्मचारियों को प्रशिक्षण देते हुए कार्यप्रणाली, आवश्यक प्रक्रियाओं तथा बेहतर कार्य निष्पादन से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी साझा की। प्रशिक्षण का उद्देश्य कर्मचारियों की कार्यक्षमता एवं व्यावहारिक ज्ञान को और अधिक बेहतर बनाना रहा।

प्रशिक्षण के उपरांत आयोजित सम्मान समारोह में केनरा बैंक के अधिकारियों ने अमिष प्रताप बालोदिया को अंगवस्त्र पहनाकर सम्मानित किया। अधिकारियों ने उनके द्वारा दिए गए प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण से कर्मचारियों को अपने कार्यों को अधिक प्रभावी एवं व्यवस्थित तरीके से करने में सहायता मिलती है।

सम्मान प्राप्त करने के बाद अमिष प्रताप बालोदिया ने केनरा बैंक के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण तभी सार्थक होता है जब उसका लाभ कर्मचारियों के दैनिक कार्यों में दिखाई दे और बैंकिंग सेवाओं को और बेहतर बनाने में योगदान मिले।

इस अवसर पर बैंक के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में सभी ने **अमिष प्रताप बालोदिया के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।**

सृष्टि कुमावत ने राजस्थानी गीत 'थिरक-थिरक' में बिखेरा हुनर

राजस्थानी फिल्म इंडस्ट्री में स्थानीय प्रतिभाओं की पहचान लगातार बढ़ रही है। चित्तौड़गढ़ निवासी सृष्टि कुमावत ने राजस्थानी फिल्म इंडस्ट्रीज राणा जी म्यूजिकल के राजस्थानी गीत **'थिरक-थिरक'** में मनमोहक प्रस्तुति देकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। गीत में सृष्टि ने राजस्थानी लिवाज में प्रस्तुति दी, जिसे दर्शकों ने सराहा। सृष्टि कुमावत, निर्मला देवी एवं स्व. बालचंद कुमावत की सुपुत्री हैं। उनके इस गीत के होने के बाद चित्तौड़गढ़, कोटा, निम्बाहेड़ा, मंदसौर और नीमच सहित विभिन्न स्थानों से कुमावत समाज के लोगों ने खुशी जताई। समाज के बुजुर्गों, भाई-बहनों, रिश्तेदारों, सोशल मीडिया ग्रुपों, विभिन्न संगठनों एवं जनप्रतिनिधियों ने सृष्टि को बधाई और शुभकामनाएं देते हुए उज्ज्वल भविष्य का आशीर्वाद दिया। सृष्टि ने अपनी प्रतिभा के माध्यम से समाज का गौरव बढ़ाया है और उम्मीद है कि वह आने वाले समय में मनोरंजन जगत में और आगे बढ़ेंगी। सृष्टि की इस उपलब्धि को लेकर कुमावत समाज में उत्साह का माहौल है। **सृष्टि कुमावत को इस उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई।**

पुण्यतिथि को बनाया जनसेवा का संकल्प

स्व. गजानंद जी करड़वाल, पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष की स्मृति में श्री कुंदन करड़वाल एवं परिवार की अनूठी पहल की है। पिछले वर्षों से सांवेर में लगातार जन सेवा के कार्य जारी है। किसी व्यक्ति की सच्ची स्मृति उसके नाम पर होने वाले आयोजनों से नहीं, बल्कि समाज के लिए किए गए सेवा कार्यों से जीवित रहती है। इसी सोच को चरितार्थ करते हुए स्व. श्री गजानंद करड़वाल की स्मृति में उनके पुत्र श्री कुंदन करड़वाल एवं परिवार द्वारा पुण्यतिथि को परिवार ने श्रद्धांजलि के साथ-साथ जनसेवा का संकल्प बना दिया है। इस श्रृंखला में विश्व प्रसिद्ध श्री पाताल विजय उल्टे हनुमान मंदिर में श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए पेयजल वाटर कूलर स्थापित कराया गया। द्वितीय पुण्यतिथि पर केशरीपुरा श्री कृष्ण मंदिर चौक में आमजन एवं श्रद्धालुओं के बैठने के लिए कुर्सियां लगवाई गईं।



तृतीय पुण्यतिथि पर सांवेर नगर में नि:शुल्क नेत्र शिविर एवं नि:शुल्क चश्मों का वितरण किया गया तथा मोतियाबिंद के नि:शुल्क ऑपरेशन करवाए गए।

चतुर्थ एवं पंचम पुण्यतिथि पर केशरीपुरा एवं सांवेर के अंतिम धाम में बैठने हेतु कुर्सियों की व्यवस्था कराई।

षष्ठी पुण्यतिथि पर केशरीपुरा स्थित श्रीराम मंदिर एवं चारभुजानाथ मंदिर में श्रद्धालुओं के बैठने के लिए कुर्सियां लगवाई गईं।

श्रद्धांजलि से आगे बढ़कर सेवा का संकल्प : स्व. श्री गजानंद जी करड़वाल की स्मृति में प्रत्येक वर्ष ऐसा कार्य करने का प्रयास किया जिसका सीधा लाभ आमजन और जरूरतमंदों को मिल सके। श्री कुंदन करड़वाल परिवार का कहना है कि स्व. गजानंद जी करड़वाल की स्मृतियों को जनसेवा के माध्यम से जीवंत रखना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

Created by Universal Document Converter

पेरिस में बने अक्षरधाम मंदिर का शुभारम्भ

फ्रांस की राजधानी पेरिस में 6 सितम्बर 2026 को पहला पारंपरिक हिंदू मंदिर श्रद्धालुओं के लिए खोल दिया गया। वैदिक मंत्रोच्चार के बीच बीएपीएस अक्षरधाम संस्थान के गुरु महंत स्वामी महाराज ने प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को पूरा किया। इसमें यूरोप, अमेरिका, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया और एशिया से आए संतों, भक्तों और गणमान्य लोगों ने हिस्सा लिया।



मंदिर का निर्माण प्राचीन भारतीय वास्तुकला और वैदिक शिल्पशास्त्र के आधार पर किया गया है। इसमें फ्रांसीसी आधुनिक तकनीक का भी सुंदर मेल देखने को मिलता है। 13 दिनों तक चले इस महोत्सव में 40 से अधिक देशों से लोग शामिल हुए।

14 रथों में निकली यात्रा : इस अवसर पर यात्रा में 14 सुसज्जित रथों पर हिंदू देवी-देवताओं की मूर्तियां सजाई गईं। पारंपरिक वेशभूषा में कलाकारों ने नृत्य प्रस्तुतियां दीं। यात्रा एफिल टावर और एकोल मिलिटेर से होते हुए प्लास द ला कॉनकॉर्ड तक पहुंची। यात्रा ने फ्रांस में भारतीय संस्कृति और हिंदू धर्म का नया अध्याय खोल दिया। यह मंदिर 5000 वर्गमीटर क्षेत्र में फैला है। ऊपरी तल पर पारंपरिक मंदिर और नीचे सांस्कृतिक केंद्र के रूप में हवेली बनाई गई है।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो संदेश में कहा कि स्वामी प्रभुपाद ने भारत के सांस्कृतिक आध्यात्मिक वैभव के पुनर्जागरण का अभियान शुरू किया था, आज उसका प्रकाश यूरोप समेत पूरी दुनिया में फैल रहा है। 2024 में अबू धाबी में भी एक भव्य मंदिर का लोकार्पण हुआ था। यह निर्माण संतों की संकल्प शक्ति का प्रमाण है।

बीएपीएस मंदिरों से भारत के प्राचीन विचार और मानवीय मूल्य प्रसारित होते हैं। यह मंदिर फ्रांस की विविधता को समृद्ध करेगा और सांस्कृतिक संबंधों को ऊर्जा देगा। भारत और फ्रांस के संबंध नई ऊंचाइयों तक पहुंचे हैं। दोनों देश राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के साथ मिलकर विशेष वैश्विक रणनीतिक साझेदारी बना रहे हैं।

हौसलों की जंजीरें तोड़ता जयपुर का लाल : पवन कुमावत ने फिर रखा तिरंगे का मान

सुबह 3 बजे उठना, पिता जगदीश कुमावत के साथ दूध की छोटी सी डेयरी संभालना, और फिर 25 किमी. साइकिल चलाकर चोगान स्टेडियम पहुंचना... यही रोज़ की जिन्दगी थी लालचंदपुरा गांव के पवन कुमावत की। वही पवन कुमावत 85 किलो पुरुष भार वर्ग में भारत का प्रतिनिधित्व करने किर्गिस्तान गए तथा वहां 120 किग्रा वजन उठाकर रजत पदक जीता तथा परिवार एवं समाज का नाम फिर से रोशन किया।



10 साल, 15 मेडल, एक जुनून : पवन भारतीय टीम के वो होनहार खिलाड़ी हैं जिन्होंने 2015 से 2025 तक 10 साल में देश को 10 गोल्ड, 3 सिल्वर और 2 ब्रॉन्ज मेडल दिए हैं।

रक्षा मंत्री से खेल मंत्री तक कर चुके हैं सम्मानित : पवन को रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान और खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडवीया के हाथों सम्मान मिल चुका है।

फिल्मी है लेकिन सच्ची है ये कहानी : 2015 में बहरीन विश्व चैंपियनशिप में गोल्ड से शुरुआत करने वाले पवन ने थाईलैंड, श्रीलंका, किर्गिस्तान, कजाकिस्तान, दोहा समेत दर्जनों देशों में तिरंगा लहराया है। लेकिन मेडल से बड़ी है उनकी जिद। थकान, गरीबी, संसाधनों की कमी... कुछ भी पवन का रास्ता नहीं रोक पाया।

टूटे हुए हौसलों के लिए सबक : पवन की कहानी हर उस खिलाड़ी के लिए है जिसने हालात के आगे घुटने टेक दिए हैं। ये साबित करती है कि अगर हौसला मजबूत हो तो लोहे की जंजीरें भी टूट जाती हैं। परिस्थितियां झुकती हैं, रुकती नहीं।

आज पवन सिर्फ 85 किलो वजन नहीं उठाते, वो लाखों टूटे सपनों को उठाने की ताकत रखते हैं। कोच संदीप कड़वासरा का संदेश : पवन जैसे खिलाड़ी बताते हैं कि बैकग्राउंड नहीं, बैकबोन मायने रखता है। अगर पवन 3 बजे उठकर दूध बांटते हुए वर्ल्ड चैंपियन बन सकते हैं, तो आप क्यों नहीं ?

हाल ही में पवन कुमावत द्वारा किर्गिस्तान में रजत पदक जीतने पर '**कुमावत इंडिया**' पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई।

Created by Universal Document Converter

विश्व मुस्कान दिवस: एक छोटी सी मुस्कान का बड़ा प्रभाव

''एक प्यारी सी मुस्कान किसी भी अजनबी को दोस्त बना सकती है और सबसे कठिन राहों को आसान कर सकती है।''

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी, प्रतिस्पर्धा और मानसिक तनाव के दौर में इंसान अपनी सबसे खूबसूरत और स्वाभाविक संपत्ति—अपनी मुस्कान—को खोता जा रहा है। इसी कमी को पूरा करने और दुनिया में सकारात्मकता फैलाने के उद्देश्य से हर साल अक्टूबर महीने के पहले शुक्रवार को विश्व मुस्कान दिवस (World Smile Day) मनाया जाता है। इस दिन को मनाने का मुख्य उद्देश्य लोगों को अपनी दैनिक चिंताओं से अलग हटकर मुस्कुराने और दूसरों के जीवन में भी खुशियां बिखेरने के लिए प्रेरित करना है।



इस खास दिन का एक प्रसिद्ध आधिकारिक संदेश (Motto) है: ''Do an act of kindness. Help one person smile.'' (दयालुता का एक काम करें और कम से कम एक व्यक्ति को मुस्कुराने की वजह दें।)

विश्व मुस्कान दिवस की शुरुआत अमेरिका के मैसाचुसेट्स के एक कमर्शियल आर्टिस्ट हार्वे बॉल (Harvey Ball) ने की थी। हार्वे बॉल वही व्यक्ति हैं जिन्होंने 1963 में आइकॉनिक **'स्माइली फेस'** (पीला गोल चेहरा) का निर्माण किया था। देखते ही देखते उनका यह स्माइली सिंबल पूरी दुनिया में खुशी और सद्भावना का प्रतीक बन गया।

समय के साथ हार्वे बॉल को लगा कि स्माइली का व्यापारिक इस्तेमाल इतना अधिक होने लगा है कि इसका मूल संदेश—दया और खुशी फैलाना—पीछे छूट रहा है। इसी सोच के साथ उन्होंने 1999 में पहली बार 'विश्व मुस्कान दिवस' मनाने की नींव रखी।

मुस्कुराने के अद्भुत स्वास्थ्य लाभ : मुस्कुराहट केवल चेहरे का एक भाव नहीं है, बल्कि यह हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए एक प्राकृतिक औषधि की तरह काम करती है:

तनाव में कमी: मुस्कुराने से हमारे मस्तिष्क में डोपामाइन और सेरोटोनिन जैसे 'फील-गुड' हार्मोन रिलीज होते हैं, जो तनाव (स्ट्रेस) और चिंता को दूर करते हैं।

इम्यूनिटी और हृदय स्वास्थ्य: वैज्ञानिकों के अनुसार मुस्कुराने से रक्तचाप (ब्लड प्रेशर) नियंत्रित रहता है और शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली (इम्यून सिस्टम) मजबूत होती है।

सकारात्मक ऊर्जा: जब आप किसी की तरफ देखकर मुस्कुराते हैं, तो सामने वाला व्यक्ति भी अनायास ही मुस्कुरा देता है, जिससे माहौल में सकारात्मकता बढ़ती है।

आज के समय में इसकी सार्थकता : आज समाज में अकेलेपन, अवसाद और मानसिक तनाव के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। ऐसे समय में एक निस्वार्थ मुस्कान किसी निराश व्यक्ति के लिए आशा की किरण बन सकती है। यह भाषा, धर्म और संस्कृतियों की सीमाओं से परे एक सार्वभौमिक भाषा है। मदरसा हो या अस्पताल, दफ्तर हो या घर—एक सच्ची मुस्कान हर जगह रिश्तों को जोड़ने का काम करती है।

निष्कर्ष : विश्व मुस्कान दिवस हमें याद दिलाता है कि खुश रहने और खुशियां बांटने के लिए किसी बड़े अवसर या धन-दौलत की आवश्यकता नहीं होती। इस दिन हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम न सिर्फ खुद मुस्कुराएंगे, बल्कि अपनी दयालुता, प्रेम और मदद से दूसरों के चेहरे पर भी मुस्कान लाएंगे।

तो आइए, आज ही से अपने चेहरे पर एक सुंदर सी मुस्कान सजाएं और इस दुनिया को थोड़ा और खूबसूरत बनाएं!

रायला के राधेश्याम कुमावत को राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ शोधकर्ता पुरस्कार



रायला। ईरास पंचायत के रामपुरिया गांव साधारण मध्यमवर्गीय परिवार से निकलकर कृषि अनुसंधान के क्षेत्र में राष्ट्रीय पहचान बनाने वाले राधेश्याम कुमावत ने समाज का नाम रोशन किया है। मेघालय के उमियाम में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में उन्हें 'सर्वश्रेष्ठ शोधकर्ता पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। 'प्राकृतिक खेती: आत्मनिर्भर कृषि और ग्रामीण समृद्धि के मार्ग' विषय पर आयोजित यह राष्ट्रीय सम्मेलन 9 से 11 सितंबर तक केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, इम्फाल के अंतर्गत स्नातकोत्तर कृषि विज्ञान महाविद्यालय, उमियाम, मेघालय में आयोजित हुआ। सम्मेलन में देशभर से कृषि वैज्ञानिक, शिक्षाविद, शोधार्थी और कृषि क्षेत्र के विशेषज्ञ शामिल हुए। राष्ट्रीय सम्मेलन में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप-महानिदेशक कृषि विस्तार डॉ. राजवीर सिंह मुख्य अतिथि रहे। केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय इम्फाल के कुलपति डॉ. अनुपम मिश्रा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

श्री राधेश्याम कुमावत को यह पुरस्कार मिलने पर बधाई।

Created by Universal Document Converter

34वां मास्टर भौंरीलाल वर्मा स्मृति व्याख्यान एवं प्रतिभा सम्मान समारोह

कुमावत समाज के अग्रपुरुष मास्टर भौंरीलाल वर्मा की 112 वीं जयन्ती 20 सितम्बर, 2026 को जयपुर में मनाई गई। इस अवसर पर 34वां मास्टर भौंरीलाल वर्मा व्याख्यान एवं प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया गया। व्याख्यानमाला की कड़ी में इस प्रो. एस. एल. कुमावत, सेवानिवृत प्राचार्य, राजकीय पी.जी. महाविद्यालय, कोटा द्वारा '**बाल विकास एवं शैक्षणिक जागरूकता**' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम के शुभारम्भ में मुख्य वक्ता प्रो. एस.एल. कुमावत, मुख्य अतिथि श्री हरि प्रसाद शर्मा, कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. अनूप कुमावत एवं ट्रस्ट अध्यक्ष श्री रामजीलाल वर्मा द्वारा मास्टरजी के



चित्र को माल्यार्पण किया गया। तत्पश्चात अतिथियों का माला पहनाकर स्वागत किया गया।

धीरज वर्मा ने ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष किये जा रहे विभिन्न कार्यकलापों के सम्बन्ध में विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि मात्र 10 वर्ष की अल्पायु में मास्टर जी के ही माता-पिता एवं पितामह का साया उठ जाने के बावजूद मास्टरजी ने आर्थिक तंगी का सामना करते हुए स्वयं अपनी आजीविका से अपना अध्ययन निरन्तर जारी रखा तथा सन् 1936 में हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् सीकर जिले के लक्ष्मणगढ़ ग्राम में रघुनाथ हाई स्कूल के आमंत्रण पर वहाँ शिक्षक के रूप में अपना जीवनवृत्त प्रारम्भ किया। इन्होंने वहाँ लगभग 12 वर्षों तक अध्यापन कार्य किया।

सन् 1947 में राजपूताना यूनिवर्सिटी जो आगे चलकर राजस्थान विश्वविद्यालय बना, की स्थापना वर्ष से ही इसकी सेवाओं से जुड़ गये तथा अनवरत रूप से सन् 1976 तक कठिन परिश्रम के साथ कार्य किया। विश्वविद्यालय की हैण्डबुक के अच्छे ज्ञाता होने के कारण कठिन मसलों पर विद्वानों साहित्यकारों एवं अधिकारियों के साथ आपके सदैव मधुर एवं सहानुभूतिपूर्ण सम्बन्ध रहे। विश्वविद्यालय के सभी अधिकारी/कर्मचारी इन्हें 'काकाजी' के नाम से सम्बोधित किया करते थे। काकाजी ही एक मात्र ऐसे व्यक्ति थे, जिन्हें विश्वविद्यालय से सम्बन्धित सिण्डीकेट, एकेडेमिक काउंसिल, फाईनेंस कमेटी, लाईब्रेरी कमेटी तथा बोर्ड ऑफ स्टेडीज के चुनाओं / मतगणना में महारत हासिल थी। शैक्षणिक योग्यता नहीं होने के उपरान्त भी विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा सेवानिवृति की निर्धारित आयु 60 वर्ष पूर्ण करने के उपरान्त भी दो वर्ष की सेवाभिवृद्धि कर 'एक्स कॉडर' पदोन्नति देते हुए सहायक कुलसचिव के पद पर पदोन्नत किया गया, जो विश्वविद्यालय के इतिहास में आज भी स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है।

मास्टरजी द्वारा जीवन पर्यन्त विद्यार्थियों को शैक्षणिक मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ साथ निर्धन एवं गरीब छात्रों के लिए आर्थिक सहायता, शैक्षणिक शुल्क, पाठ्य-पुस्तकें आदि की व्यवस्था करना ही अपना धर्म समझते थे। जयपुर शहर से बाहर के छात्रों के लिए आवास व्यवस्था, जिसमें कल्याण जी का रास्ता स्थित बाल निवास में छात्रावास की स्थापना करना प्रमुख है, उनके द्वारा पुस्तकीय सहायता उपलब्ध कराने के लिए पूर्व में बाल निवास में एक पुस्तकालय श्री बालजी घोड़ेला पुस्तकालय की स्थापना की गई थी तत्पश्चात् अपने घर पर अपनी दादीजी की स्मृति में श्रीमती लक्ष्मी स्मृति पुस्तकालय की स्थापना की गई।

व्याख्यानमाला की कड़ी में इस वर्ष मुख्य वक्ता प्रो. एस. एल. कुमावत सेवानिवृत प्राचार्य, राजकीय पी.जी. महाविद्यालय, कोटा ने ''**बाल विकास एवं शैक्षणिक जागरूकता**'' विषय पर अपना व्याख्यान में मास्टर भौंरीलाल वर्मा के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में बताते हुए उन्होंने बताया कि आज शिक्षा और जागरूकता एक बेहतर इंसान बनने, तर्क संगत निर्णय लेने, सक्षम बनने और जिम्मेदार नागरिक बनाती है। शिक्षा सफलता की नींव है। शिक्षा स्वयं के साथ साथ समाज के लिए कार्य हेतु प्रेरित करती है। शिक्षा व्यक्ति का मानसिक और शारीरिक विकास करती है, तर्कशक्ति बढ़ाती है, आत्म विश्वास देती और जीवन में बेहतर अवसर प्रदान करती है। शिक्षा ज्ञान, कौशल और मूल्यों को प्राप्त करने की वह प्रकिया है जो हमारे चरित्र और भविष्य को आकार देती है।

से.नि. पुलिस महानिरीक्षक एवं भूतपूर्व अध्यक्ष कर्मचारी चयन आयोग, जयपुर ने कार्यक्रम की अगली कड़ी में मुख्य अतिथि **श्री हरि प्रसाद शर्मा** ने अपने उद्‌बोधन में बताया कि मास्टरजी ने जीवन पर्यन्त समाज सेवा के साथ साथ शिक्षा के क्षेत्र में नई नई योजनाओं को शुरू किया। अपना पराया किसी भी प्रकार का भेदभाव किये बिना सदैव अभिभावक के रूप में केवल कुमावत समाज तक ही केन्द्रित नहीं थे, अपितु सभी समाज के जरूरतमंद एवं प्रतिभावान विद्यार्थियों के लिए अध्ययन के साथ साथ उनके लिए शिक्षा, आवास, भोजन के अतिरिक्त रोजगार तक की सुविधा उपलब्ध कराते थे।

Created by Universal Document Converter

समारोह की अध्यक्षता कर रहे **डॉ. अनूप कुमावत** ने अपने उद्बोधन में बताया कि मास्टरजी आज हमारे बीच में नहीं है, लेकिन उनके द्वारा किये गये शैक्षणिक और सामाजिक कार्यो के कारण ही वे सदैव स्मरणीय है। उन्हें विभागाध्यक्ष होने के कारण विश्वविद्यालय कार्यो के सम्बन्ध में मास्टर साहब द्वारा तैयार की गई हैण्डबुक का उपयोग कर विभागीय कार्यों के सम्पादन में सफलता मिली है।

ट्रस्ट द्वारा 21 मेधावी विद्यार्थियों जिनके इस वर्ष सैकण्डरी अथवा सीनियर सैकण्डरी परीक्षा में न्यूनतम 90 प्रतिशत अथवा उससे अधिक अंक प्राप्त किये है, उनको प्रोत्साहन राशि वितरित गई एवम् इस वर्ष पी.एच.डी. उपाधि प्राप्त करने पर श्रीमती प्रियंका देवतवाल को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

धार्मिक आस्था से संबंधित नियम



व्रत, उपवास, पाठ-पूजा, दान-पुण्य ये सभी हमारी आस्था तथा धर्म के प्रति हमारे अटूट विश्वास तथा सनातन का अमूल्य अंग है। हमारी धार्मिक परम्पराएं हमें जीने का सम्बल और आन्तरिक शक्ति प्रदान करती है। धर्म और आस्था उतनी ही जीवन दायिनी शक्तियां हैं जितनी कि वायु, सूर्य, धरा, जल व अन्न है। मगर आज के समय में लोगों ने व्यक्ति को श्रद्धा की दृष्टि से देखना भी छोड़ दिया है। आज हम में से कितने ही लोग भगवान के मंदिर में जाते ही ईश्वर में ध्यान ना लगाकर अपना मोबाइल फोन तुरंत फरत में सम्भालने लगते हैं। भगवान की मूर्ति के समक्ष हाथ जोड़कर खड़े होने व प्रभु के दर्शन व प्रार्थना में ध्यान लगाने के स्थान पर एक अच्छी सी तस्वीर खिंचवाने में लोगों का रुझान अधिक दिखाई देता है। आजकल लोग फैशनबाजी, दिखावे व मनोरंजन के लिए मंदिरों में अधिक जाने लगे हैं। हर जगह अशुद्धि व अपवित्रता का माहौल बना है।

हमारे देश में वर्ष भर मनाए जाने वाले सभी त्यौहारों का कोई ना कोई तथ्यात्मक महत्व है। त्यौहार किसी राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना के मुख्य अंग व स्वरूप स्वयं प्रतीक हुआ करते हैं। त्यौहार व धार्मिक आयोजन समाज विशेष की सभ्यता व संस्कृति के परिचायक तो होते ही है, साथ ही परस्पर सुख-आनन्द को साझा करने का साधन ही होते हैं मगर आज के समय में सारे तीज त्यौहार अपने मूल स्वरूप, विधि-विधान, औचित्यता व परम्परा को खो चुके हैं। दिखावे के फेर ने त्यौहारों को व्यवसायिक बना दिया है। किसी भी देवी-देवता की पूजा के कुछ विधि-विधान होते हैं। इनके पूर्ण ज्ञान व जानकारी से आज बहुत कम लोग परिचित हैं। सिर्फ दिखावे और हौड़ा-होड़ी में किसी भी दृष्टि या भगवान को घर में बैठाना व गलत विधि से उनका पाठ-पूजन करना प्रतिकूल व विपरीत प्रभाव ही डालता है। कहने का तात्पर्य है कि आस्था के साथ धार्मिक विधि-विधान के नियमों का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। आजकल लोगों में तीर्थ स्थलों व बड़े-बड़े धामों की यात्राओं के प्रति भी बहुत रुझान हो रहा है। असंख्य लोग वर्ष भर दूर-दूर की तीर्थ यात्राओं पर कभी भी निकल पड़ते हैं। उनके मन में भगवान के दर्शन से ज्यादा घूमने, पिकनिक करने, तस्वीरे लेने और मनोरंजन करने में अधिक होती है।

पर्वतीय भागों में स्थित तीर्थों के बारे में ऐसा माना जाता था कि सावन का महिना भगवान शंकर के सर्वाधिक जागृत स्वरूप को दर्शाता है। कहा जाता है कि इस पवित्र माह में भगवान शिव स्वयं पृथ्वी लोक पर आते हैं तथा हिमालय पर तपस्या करते हैं। हिमालय को भगवान शिव का निवास माना जाता है। इसलिए स्वयं साधु-संत महात्मा भी हिमालय व अन्य पर्वतीय तीर्थ स्थलों को छोड़कर मैदानी भागों में स्थिति मंदिरों व तीर्थ स्थानों में ही विश्राम स्थली बनाकर समय व्यतीत करते हैं। मगर आजकल सामान्य जन इस माह में भी लाखों की संख्या में अमरनाथ, बद्रीनाथ, केदारनाथ जैसे पवित्र तीर्थों पर पहुंच कर वहां के वातावरण को दूषित कर रहे हैं। वहां मल-मूत्र की गंदगी व जूठन तथा कचरे के ढेर लगा कर ना केवल आस्था से बल्कि प्रकृति से भी खिलवाड़ कर रहे हैं और इन सभी कृत्यों के नकारात्मक व भयावह परिणाम आज हम सबके सामने हैं। अमरनाथ में भगवान शिव का हिमलिंग के स्वरूप में दर्शन ना देना, आपदाओं का कहर इत्यादि हमें कुछ संकेत दे रहे हैं। इसके अलावा आजकल महिलाएं महावारी के समय भी मंदिरों में पाठ-पूजा में व धार्मिक अनुष्ठानों में हिस्सा लेने को स्वयं की स्वतंत्रता व अधिकार का हिस्सा समझने लगी हैं। इसके लिए महिलाओं ने कानूनी लड़ाई तक भी लड़ी है। पढ़ने-लिखने का और शिक्षित होने का तात्पर्य अपनी परम्पराओं के विरुद्ध, धर्म और नैतिक के विरुद्ध लड़ना रह गया है क्या? ये कहां तक उचित है कि आप अपनी ही परम्पराओं को नष्ट करने पर तुले हैं? सनातन में जो भी नियम धर्म के संबंध में बनाए गए हैं वे सब हमारे पूर्वजों द्वारा वैज्ञानिक तथ्यों को ध्यान में रखकर ही बनाए गए हैं। मेरा मानना है कि हम जितने शिक्षित होते जा रहे हैं उतने ही मूर्ख और जिद्दी होते जा रहे हैं। आजकल कहा जाता है कि भक्ति और श्रद्धा में लोगों का रुझान बढ़ रहा है, अज्ञानता बढ़ रही है जिसका आस्था और विश्वास से ज्यादा व्यापरीकरण को बढ़ावा देने में सर्वाधिक सहयोग है। धर्म से जुड़ना है तो धैर्य को अपनाइये। छल कपट, स्वार्थ व ईर्ष्या को छोड़कर, आपसी प्रेम, सहयोग व त्याग को अपनाइये। दूसरों की सहायता कीजिए और निश्छल भाव से आडम्बर रहित भगवान का स्मरण एवं पूजन कीजिए।

- उर्वशी बालोदिया

Created by Universal Document Converter

गांधी जयंती: सत्य, अहिंसा और आदर्शों का पर्व



हर साल 2 अक्टूबर का दिन भारत ही नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इसी पावन तिथि को महात्मा गांधी (मोहनदास करमचंद गांधी) का जन्म गुजरात के पोरबंदर में 1869 को हुआ था। उनके असाधारण योगदान और विचारों के सम्मान में इस दिन को पूरे देश में 'गांधी जयंती' के रूप में और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा 'अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

स्वतंत्रता संग्राम में गांधी जी की भूमिका

महात्मा गांधी केवल एक राजनीतिक नेता नहीं थे, बल्कि एक महान विचारक, समाज सुधारक और युगदृष्टा थे। उन्होंने भारत को ब्रिटिश शासन की पराधीनता से मुक्त कराने के लिए एक ऐसा मार्ग चुना जो दुनिया के इतिहास में अनूठा था—''सत्य और अहिंसा''।

गांधी जी ने दिखाया कि बिना शस्त्र उठाए भी दुनिया की सबसे बड़ी औपनिवेशिक शक्ति को झुकाया जा सकता है। उनके द्वारा चलाए गए प्रमुख आंदोलनों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की दिशा बदल दी:

- चंपारण और खेड़ा सत्याग्रह: किसानों के अधिकारों और न्याय के लिए शुरुआती संघर्ष।
- असहयोग आंदोलन (1920): ब्रिटिश हुकूमत के साथ किसी भी प्रकार का सहयोग न करने का आह्वान।
- दांडी यात्रा और सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930): नमक कानून तोड़कर ब्रिटिश एकाधिकार को चुनौती देना।
- भारत छोड़ो आंदोलन (1942): ''करो या मरो'' के नारे के साथ अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर मजबूर करना।

गांधीवादी विचार और उनकी प्रासंगिकता

गांधी जयंती केवल एक राष्ट्रीय छुट्टी या औपचारिक उत्सव नहीं है; यह गांधी जी के विचारों को अपने जीवन में उतारने का अवसर है। उनके प्रमुख विचार आज के समय में भी उतने ही प्रासंगिक हैं:

1. सत्य और अहिंसा: गांधी जी का मानना था कि सत्य ही ईश्वर है। हिंसा से तात्कालिक जीत मिल सकती है, लेकिन स्थायी शांति केवल अहिंसा और संवाद से ही संभव है।

2. सत्याग्रह: अन्याय के खिलाफ बिना किसी नफरत या हिंसा के दृढ़ता से खड़े रहना।

3. स्वदेशी और स्वावलंबन: उन्होंने चरखे और खादी को आत्मनिभरता का प्रतीक बनाया। उनका मानना था कि स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा देकर ही देश को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा सकता है।

4. स्वच्छता: गांधी जी स्वच्छता को ईश्वर की भक्ति के समान मानते थे। आज भारत सरकार का 'स्वच्छ भारत अभियान' उनके इसी विचार से प्रेरित है।

5. सर्वोदय: समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े व्यक्ति का उत्थान ही सच्चा विकास है।

गांधी जयंती कैसे मनाई जाती है?

इस दिन पूरा देश बापू को श्रद्धांजलि अर्पित करता है। देश के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री नई दिल्ली स्थित उनके समाधि स्थल 'राजघाट' पर पुष्पांजलि अर्पित करते हैं और प्रार्थना सभा का आयोजन होता है, जहाँ बापू के प्रिय भजन गाये जाते हैं।

स्कूलों, कॉलेजों और सरकारी कार्यालयों में भाषण, निबंध प्रतियोगिताएं, चित्रकला और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इसके साथ ही, कई स्थानों पर स्वच्छता अभियान, रक्तदान शिविर और समाज सेवा के कार्य किए जाते हैं।

निष्कर्ष : आज की दुनिया में, जहाँ चारों ओर तनाव, हिंसा, विषमता और पर्यावरण संकट बढ़ रहा है, गांधी जी के विचार एक मार्गदर्शक प्रकाशपुंज की तरह हैं। गांधी जयंती हमें याद दिलाती है कि शांति और प्रगति का रास्ता हिंसा से नहीं, बल्कि आपसी समझ, सहनशीलता और सत्य के मार्ग पर चलकर ही तय किया जा सकता है। बापू के बताए रास्तों पर चलना ही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

केबीसी में कृष्ण ने जीते 50 लाख



पाटन (सीकर)। दिन में टाइल लगाने का काम और रात में किताबों से ज्ञान बढ़ाने की मेहनत आखिरकार रंग लाई। क्षेत्र के श्यामपुरा गांव के कृष्ण कुमावत (35) ने **कौन बनेगा करोड़पति** के 18वें सीजन में 50 लाख रुपए जीतने के बाद खेल छोड़ने का फैसला किया।

कृष्ण साधारण परिवार से हैं पर आर्थिक परिस्थितियों के बावजूद कृष्ण ने पढ़ाई का साथ नहीं छोड़ा। ग्रामीणों ने ग्राम पंचायत परिसर में बड़ी एलसीडी स्क्रीन लगाकर कार्यक्रम का लाइव प्रसारण एक साथ बैठकर देखा तथा कृष्ण को जीतते हुए उनमें भारी उत्साह एवं खुशी की अनुभूति हुई। इस उपलब्धि के लिए **श्री कृष्ण कुमावत को बहुत-बहुत बधाई।**

Created by Universal Document Converter

लाल बहादुर शास्त्री जयंती: सादगी, निष्ठा और दृढ़ संकल्प का अमर प्रतीक



भारत में हर वर्ष 2 अक्टूबर का दिन केवल राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती के रूप में ही नहीं, बल्कि देश के दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती के रूप में भी अत्यधिक श्रद्धा और गर्व के साथ मनाया जाता है। शास्त्री जी एक ऐसी महान विभूति थे, जिन्होंने अपनी अतुलनीय सादगी, ईमानदारी और अदम्य इच्छाशक्ति से भारत के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय लिखा। उनका संपूर्ण जीवन यह सिद्ध करता है कि व्यक्ति अपने पद या कद से नहीं, बल्कि अपने विचारों और कर्मों से महान बनता है।

प्रारंभिक जीवन और संघर्ष

लाल बहादुर शास्त्री का जन्म 2 अक्टूबर 1904 को उत्तर प्रदेश के मुगलसराय में हुआ था। बचपन में ही पिता का साया सिर से उठ जाने के कारण उनका शुरुआती जीवन अत्यधिक आर्थिक तंगी और कठिनाइयों में बीता। इसके बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और अपनी शिक्षा जारी रखी। महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरित होकर वे मात्र 16 वर्ष की आयु में स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ गए। काशी विद्यापीठ से स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्हें 'शास्त्री' की उपाधि मिली, जो आगे चलकर उनके नाम की पहचान बन गई।

कुशल नेतृत्व और 'जय जवान, जय किसान'

वर्ष 1964 में पंडित जवाहरलाल नेहरू के निधन के पश्चात शास्त्री जी ने कठिन परिस्थितियों में देश के प्रधानमंत्री का पदभार संभाला। उस समय भारत दो भयानक संकटों से जूझ रहा था— **(1) देश में अनाज की भारी कमी और (2) सीमा पर सुरक्षा की चुनौती।** 1965 में जब पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किया, तो शास्त्री जी ने दृढ़ नेतृत्व और बुद्धिमत्ता का परिचय देते हुए भारतीय सेना को सशक्त जवाब देने का निर्देश दिया। इससे पाकिस्तान की सेना को घुटने टेकने पड़े।

इसी ऐतिहासिक मोड़ पर उन्होंने देश को **''जय जवान, जय किसान''** का अमर नारा दिया। यह नारा केवल एक शब्द-समूह नहीं था, बल्कि सीमाओं की रक्षा करने वाले सैनिकों और देश का पेट भरने वाले किसानों के प्रति राष्ट्र की कृतज्ञता का प्रतीक बन गया। उनके कार्यकाल में ही कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए **'हरित क्रांति'** और दुग्ध उत्पादन को प्रोत्साहन देने के लिए **'श्वेत क्रांति'** की मजबूत नींव रखी गई।

उच्च नैतिक मूल्य और सादगी

शास्त्री जी की ईमानदारी और उच्च नैतिक आदर्शों के उदाहरण आज भी दिए जाते हैं। जब वे रेल मंत्री थे, तब एक ट्रेन दुर्घटना की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया था। जब देश में खाद्यान्न संकट गहराया, तो जनता से सप्ताह में एक दिन उपवास रखने की अपील करने से पहले उन्होंने स्वयं अपने परिवार में एक दिन का उपवास रखा, ताकि वे केवल वही कहें जिसका वे खुद पालन करते हों।

शास्त्री जयंती का महत्व और संदेश

लाल बहादुर शास्त्री जयंती का अवसर हमें याद दिलाता है कि सच्चा नेतृत्व निस्वार्थ सेवा, विनम्रता और राष्ट्र के प्रति अटूट निष्ठा से बनता है। आज के दौर में, जब नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों की रक्षा करना अत्यंत आवश्यक हो गया है, शास्त्री जी का जीवन दर्शन हर भारतीय के लिए मार्गदर्शक प्रकाशपुंज है।

2 अक्टूबर को शास्त्री जयंती के दिन पूरा देश उनकी समाधि 'विजय घाट' पर उन्हें नमन करता है। आइए, इस पावन अवसर पर हम शास्त्री जी के सत्य, ईमानदारी और देशसेवा के आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का संकल्प लें।

उदयपुर के डॉ गौरव कुमावत (टांक) ने वियतनाम में आयोजित किया अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन



डॉ गौरव कुमावत (टांक), सुपुत्र स्व. श्री विनोद कुमार कुमावत, जो वर्तमान में मणिपाल यूनिवर्सिटी जयपुर में कार्यरत हैं, ने वियतनाम के दानांग शहर में अंतरराष्ट्रीय शोध सम्मेलन का सफल आयोजन किया। सम्मेलन में विश्व के विभिन्न देशों से आए 100 से अधिक शोधकर्ताओं एवं शिक्षाविदों ने भाग लिया और अपने शोध प्रस्तुत किए।

सम्मेलन के दौरान गौरव कुमावत को उनके उत्कृष्ट शोध एवं अकादमिक योगदान के लिए **'बेस्ट रिसर्चर अवॉर्ड'** से सम्मानित किया गया।

इसी वर्ष उन्हें दुबई और फिलीपींस में भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया गया। अब वियतनाम में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया।

डॉ गौरव कुमावत की इन उपलब्धियों से उदयपुर और राजस्थान का नाम अंतरराष्ट्रीय अकादमिक एवं शोध मंच पर गौरवान्वित हुआ है। **डॉ. गौरव कुमावत की इस सफलता पर हार्दिक बधाई।**

Created by Universal Document Converter

नवरात्रि के नौ दिन: माँ दुर्गा के नौ स्वरूपों में छिपी जीवन की अनमोल सीख



भारत में मनाए जाने वाले प्रमुख धार्मिक त्योहारों में नवरात्रि का विशेष महत्व है। यह पर्व केवल माँ दुर्गा की पूजा, व्रत और उत्सव तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके पीछे शक्ति, साधना, आत्मसंयम और धर्म की विजय का गहरा संदेश छिपा हुआ है। नवरात्रि के नौ दिनों में माँ आदिशक्ति के नौ स्वरूपों की आराधना की जाती है। प्रत्येक स्वरूप अपने भीतर एक विशेष गुण, आध्यात्मिक शक्ति और जीवन का महत्वपूर्ण संदेश समेटे हुए है।

'नवरात्रि' का अर्थ है—नौ रातें। हिंदू परंपरा में वर्षभर में चार नवरात्रियों का उल्लेख मिलता है, जिनमें चैत्र और शारदीय नवरात्रि प्रमुख हैं। शारदीय नवरात्रि आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से प्रारंभ होती है।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इसी अवधि में माँ दुर्गा ने महिषासुर नामक असुर का वध करके देवताओं और संसार को उसके अत्याचार से मुक्ति दिलाई थी। महिषासुर अत्यंत शक्तिशाली था और उसे पराजित करना देवताओं के लिए भी कठिन हो गया था। तब ब्रह्मा, विष्णु और महेश सहित सभी देवताओं की शक्तियों से आदिशक्ति का प्राकट्य हुआ। देवी ने महिषासुर से युद्ध किया और अंततः उसका संहार किया।

यह कथा केवल एक असुर के वध की कहानी नहीं है। यह प्रतीक है कि जब अहंकार, अन्याय और अत्याचार बढ़ने लगते हैं, तब धर्म और सत्य की रक्षा के लिए शक्ति का जागरण आवश्यक हो जाता है।

नवरात्रि के नौ दिन हमें यह भी सिखाते हैं कि बाहरी बुराइयों से लड़ने से पहले मनुष्य को अपने भीतर छिपे क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और नकारात्मक विचारों पर विजय प्राप्त करनी चाहिए।

नवरात्रि के नौ दिन और माँ दुर्गा के नौ स्वरूप

पहला दिन: **माँ शैलपुत्री — स्थिरता और दृढ़ संकल्प :** नवरात्रि के प्रथम दिन माँ शैलपुत्री की पूजा की जाती है। 'शैलपुत्री' का अर्थ है पर्वतराज हिमालय की पुत्री। इन्हें माता पार्वती का स्वरूप माना जाता है। माँ शैलपुत्री नंदी पर विराजमान रहती हैं और उनके हाथों में त्रिशूल तथा कमल सुशोभित होते हैं।

जीवन की सीख: जिस प्रकार पर्वत कठिन परिस्थितियों में भी अडिग रहता है, उसी प्रकार हमें अपने जीवन में धैर्य, आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प बनाए रखना चाहिए। किसी भी बड़े कार्य की शुरुआत मजबूत आधार से होती है।

दूसरा दिन: **माँ ब्रह्मचारिणी — तपस्या और संयम :** दूसरे दिन माँ ब्रह्मचारिणी की आराधना होती है। यह स्वरूप माता पार्वती की कठोर तपस्या का प्रतीक है। मान्यता है कि भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त करने के लिए उन्होंने कठिन तप किया था। माँ ब्रह्मचारिणी के एक हाथ में जपमाला और दूसरे हाथ में कमंडल रहता है।

जीवन की सीख: सफलता प्राप्त करने के लिए धैर्य, अनुशासन और निरंतर प्रयास आवश्यक हैं। जीवन में कठिनाइयाँ आएँ, तब भी अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होना चाहिए।

तीसरा दिन: **माँ चंद्रघंटा — साहस और संतुलन :** नवरात्रि के तीसरे दिन माँ चंद्रघंटा की पूजा की जाती है। इनके मस्तक पर अर्धचंद्र के आकार का घंटा सुशोभित होता है, इसलिए इन्हें चंद्रघंटा कहा जाता है। माँ चंद्रघंटा को शांति और वीरता का अद्भुत समन्वय माना जाता है।

जीवन की सीख: सच्चा साहस केवल युद्ध करने में नहीं, बल्कि कठिन परिस्थितियों में शांत रहकर सही निर्णय लेने में भी है। हमें भय के सामने झुकने के बजाय विवेक और आत्मबल से काम लेना चाहिए।

चौथा दिन: **माँ कूष्मांडा — सृजन और सकारात्मक ऊर्जा :** चौथे दिन माँ कूष्मांडा की पूजा की जाती है। धार्मिक परंपरा में इन्हें सृष्टि की रचनात्मक शक्ति का स्वरूप माना गया है। मान्यता है कि उनके दिव्य तेज से ब्रह्मांड की रचना हुई।

जीवन की सीख: हमारे भीतर भी सृजन करने की क्षमता है। सकारात्मक विचार, रचनात्मकता और आशावादी दृष्टिकोण जीवन में नई संभावनाओं का निर्माण कर सकते हैं। हमें निराशा के अंधकार में भी आशा का दीप जलाए रखना चाहिए।

पाँचवाँ दिन: **माँ स्कंदमाता — ममता और जिम्मेदारी :** नवरात्रि के पाँचवें दिन माँ स्कंदमाता की आराधना की जाती है। वे भगवान कार्तिकेय, जिन्हें स्कंद भी कहा जाता है, की माता हैं। उनकी गोद में बाल स्कंद विराजमान रहते हैं। माँ स्कंदमाता मातृत्व, करुणा और वात्सल्य की प्रतीक मानी जाती हैं।

जीवन की सीख: सच्चा प्रेम केवल भावनाओं तक सीमित नहीं होता, बल्कि उसमें जिम्मेदारी, त्याग और संरक्षण की भावना भी होती है। हमें अपने परिवार और समाज के प्रति संवेदनशील और उत्तरदायी बनना चाहिए।

छठा दिन: **माँ कात्यायनी — शक्ति और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष :** छठे दिन माँ कात्यायनी की पूजा की जाती है। देवी महात्म्य की परंपरा में माँ दुर्गा के महिषासुरमर्दिनी रूप से जुड़ी शक्ति का विशेष महत्व है। कात्यायनी को साहस, पराक्रम और धर्म की रक्षा करने वाली देवी के रूप में पूजा जाता है।

Created by Universal Document Converter

जीवन की सीख: अन्याय के सामने मौन रहना उचित नहीं है। हमें सत्य का साथ देने, कमजोरों की रक्षा करने और गलत बातों का विवेकपूर्ण विरोध करने का साहस रखना चाहिए।

सातवाँ दिन: **माँ कालरात्रि — भय पर विजय :** नवरात्रि के सातवें दिन माँ कालरात्रि की आराधना होती है। उनका स्वरूप अत्यंत उग्र माना जाता है, लेकिन भक्तों के लिए वे कल्याणकारी हैं। इसी कारण उन्हें शुभंकरी भी कहा जाता है। माँ कालरात्रि अज्ञान, भय और नकारात्मक शक्तियों के विनाश का प्रतीक हैं।

जीवन की सीख: जीवन में कई बार भय हमारी प्रगति का सबसे बड़ा अवरोध बन जाता है। हमें अपने डर से भागने के बजाय उसका सामना करना सीखना चाहिए। आत्मज्ञान और साहस से अंधकार दूर किया जा सकता है।

आठवाँ दिन: **माँ महागौरी — शुद्धता और आत्मशुद्धि :** आठवें दिन माँ महागौरी की पूजा की जाती है। उनका स्वरूप शांति, पवित्रता और निर्मलता का प्रतीक माना जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, कठोर तपस्या के बाद माता पार्वती को गौर वर्ण की प्राप्ति हुई थी।

जीवन की सीख: मनुष्य का वास्तविक सौंदर्य उसके बाहरी रूप में नहीं, बल्कि उसके विचारों, व्यवहार और चरित्र की पवित्रता में होता है। हमें अपने मन से ईर्ष्या, द्वेष और अहंकार को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

नौवाँ दिन: **माँ सिद्धिदात्री — ज्ञान और पूर्णता :** नवरात्रि के अंतिम दिन माँ सिद्धिदात्री की पूजा की जाती है। इन्हें सिद्धियों और आध्यात्मिक ज्ञान की दात्री माना जाता है। धार्मिक परंपरा में वे भक्तों को साधना के फल और आत्मिक उन्नति प्रदान करने वाली देवी हैं।

जीवन की सीख: जीवन की वास्तविक सफलता केवल धन, पद या प्रतिष्ठा प्राप्त करना नहीं है। सच्ची सिद्धि तब मिलती है, जब मनुष्य ज्ञान, विनम्रता, संतुलन और आत्मबोध का विकास करता है।

नवरात्रि हमें याद दिलाती है कि शक्ति केवल किसी बाहरी देवी की आराधना में नहीं, बल्कि अपने भीतर छिपे साहस, संयम, करुणा और विवेक को पहचानने में भी है। माँ दुर्गा के नौ स्वरूप जीवन के अलग-अलग चरणों में हमारा मार्गदर्शन करते हैं।

यदि हम नवरात्रि के नौ दिनों में सीखे गए गुणों को अपने आचरण में उतार लें, तो यह पर्व केवल नौ दिनों का उत्सव न रहकर पूरे जीवन को बेहतर बनाने की प्रेरणा बन सकता है।

माँ दुर्गा की सच्ची आराधना वही है, जिसमें भक्ति के साथ अच्छे विचार, सत्य का आचरण और दूसरों के प्रति करुणा भी शामिल हो।

- सीमा कुमावत

विजया दशमी

त्रेता युग में भगवान विष्णु ने राक्षसों का वध करने के लिए 'राम' के रूप में अवतार लिया था। जब राम वन में थे तब रावण ने सीता का हरण कर लिया था। राम और लक्ष्मण ने सीता का पता लगाने का प्रयास किया तो ज्ञात हुआ कि सीता को रावण द्वारा अपहरण कर लिया गया था। श्रीराम ने वानरों को साथ लेकर सीता को लाने तथा रावण को मारने का निश्चय किया। इस क्रम में उनकी सेना सौ योजन के समुद्र को पार कर लंका पहुंची भीषण युद्ध हुआ और युद्ध में इसी दिन भगवान श्रीराम ने रावण का वध किया था। इसलिए अब हम इस पर्व को अधर्म पर धर्म की विजय के रूप में मनाते हैं। इसके अलावा विजयादशमी मनाने के अन्य कारण निम्न भी है-

इस दिन मां कात्यायनी ने **महिषासुर (राक्षस) का वध** किया था इसलिए इसे विजयादशमी कहते हैं। भगवान शिव की पत्नी **माता सती** ने इसी दिन अपने पिता दक्ष प्रजापति के यज्ञ में भगवान शिव का अपमान देखकर योगाग्नि से स्वयं को भस्म कर लिया था तब भगवान शिव के गणों ने वीरभद्र के सेनापतित्व में यज्ञ विध्वंस कर दिया था और दक्ष का वध कर दिया था। **महाभारत काल** में इसी दिन पांडव द्यूत में अपना राज्य गंवाकर 12 वर्ष के वनवास और 1 वर्ष के अज्ञातवास के लिए चले गए थे और अज्ञातवास की समाप्ति पर इसी दिन अर्जुन ने शमी (खेजड़ी) वृक्ष से अपने शस्त्र उतार कर कौरवों से **विराटनगर में युद्ध** किया था और उन्हें परास्त किया था।

विजयादशमी का पर्व पूरे देश में मनाया जाता है। विजयादशमी से पूर्व नवदुर्गा का पर्व 'नवरात्र' मनाया जाता है जिसका समापन विजयादशमी के पर्व के रूप में होता है। **हिमाचल प्रदेश के कुल्लू शहर और कर्नाटक के मैसूर का दशहरा तो विश्व प्रसिद्ध है। राजस्थान में भी कोटा शहर में 'राष्ट्रीय दशहरा मेला लगता है** जिसमें लाखों लोग भाग लेते हैं। पूरे उत्तरी भारत में यह पर्व पूरे उत्साह के साथ मनाया जाता है। महाराष्ट्र में भी इसे धूमधाम से मनाते हैं।

विजयादशमी अधर्म पर धर्म की विजय का पर्व है। इस दिन शास्त्रों की पूजा की जाती है तथा शास्त्रों की रक्षा करने के लिए ही तो शस्त्र उठाया जाता है। याद है जब एक राक्षस वेदों को चुराकर पाताल लोक में ले गया था तब भगवान विष्णु ने शास्त्रों को बचाने के लिए मत्स्य अवतार लिया था। यह कथा विष्णु पुराण में लिखी है। जब हिरण्याक्ष पृथ्वी को डुबोने के लिए पाताल लोक में ले गया था तब श्री हरि ने 'वराह अवतार' लेकर पृथ्वी की रक्षा की थी। यदि पृथ्वी नष्ट हो जाती तो शास्त्र भी नष्ट हो जाते। शास्त्र हमें जीवन पद्धति सिखलाते हैं। इसलिए इस दिन पूजे जाते हैं।

Created by Universal Document Converter

नवरात्रा स्थापना: शक्ति आराधना से कुलदेवी परंपरा तक

नौ रातें, नौ शक्तियां और पीढ़ियों से चली आ रही आस्था की विरासत



नवरात्रा केवल नौ दिनों तक चलने वाला धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति में शक्ति, साधना, संस्कार और प्रकृति के सम्मान का पर्व है। शारदीय नवरात्रा की शुरुआत आश्विन शुक्ल प्रतिपदा को घटस्थापना के साथ होती है। घरों और मंदिरों में अखंड ज्योत प्रज्वलित होती है, जौ बोए जाते हैं और मां दुर्गा के विभिन्न स्वरूपों की आराधना शुरू होती है। कुमावत समाज की सांस्कृतिक परंपराओं में भी कुलदेवी आराधना का विशेष स्थान रहा है। पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही यह आस्था केवल पूजा की परंपरा नहीं, बल्कि अपने पूर्वजों, संस्कारों और सामाजिक पहचान से जुड़ने का माध्यम भी है।

घटस्थापना में छिपा है प्रकृति से जुड़ा संदेश



नवरात्रा के पहले दिन होने वाली घटस्थापना पर्व का महत्वपूर्ण संस्कार है। कलश में जल भरना जीवन और सृजन का प्रतीक माना जाता है। उसके ऊपर नारियल और पत्ते स्थापित किए जाते हैं तथा उसके समीप जौ बोए जाते हैं। जौ के अंकुरित होने की प्रक्रिया प्रकृति के जीवनचक्र का सुंदर प्रतीक है। कुछ ही दिनों में छोटे-छोटे पौधे निकलकर हरे हो जाते हैं। इसीलिए नवरात्रा के जवारे को कई स्थानों पर समृद्धि, उन्नति और शुभता से जोड़ा जाता है।

नौ दिन, देवी के नौ स्वरूप

नवरात्रा में देवी के नौ स्वरूपों की पूजा की जाती है- प्रथम दिन-मां शैलपुत्री, द्वितीय दिन-मां ब्रह्मचारिणी, तृतीय दिन-मां चंद्रघंटा, चतुर्थ दिन-मां कूष्मांडा, पंचम दिन-मां स्कंदमाता, षष्ठम दिन-मां कात्यायनी, सप्तम दिन-मां कालरात्रि, अष्टम दिन-मां महागौरी, नवम दिन-मां सिद्धिदात्री इन नौ रूपों को शक्ति के अलग-अलग गुणों से जोड़ा जाता है। कहीं धैर्य और तपस्या, कहीं मातृत्व और करुणा, तो कहीं साहस और पराक्रम का संदेश मिलता है। अर्थात नवरात्रा हमें यह समझाता है कि शक्ति का स्वरूप केवल बाहरी सामर्थ्य नहीं, बल्कि चरित्र, संयम, ज्ञान और आत्मविश्वास भी है।

कुमावत समाज और कुलदेवी की परंपरा

भारतीय समाज व्यवस्था में कुलदेवी की परंपरा का विशेष महत्व रहा है। परिवार और वंश की आराध्या देवी के प्रति श्रद्धा व्यक्त करना हमारी सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा है। कुमावत समाज में भी विभिन्न परिवारों और गोत्रों की अपनी-अपनी कुलदेवी परंपराएं रही हैं। नवरात्रा ऐसे अवसर हैं जब परिवार अपनी कुलदेवी का स्मरण करते हैं, मंदिरों में दर्शन करते हैं और नई पीढ़ी को अपनी परंपराओं से परिचित कराते हैं। यह परंपरा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं है। इसके पीछे एक सामाजिक संदेश भी है- अपनी जड़ों को याद रखिए और आने वाली पीढ़ी को अपनी विरासत से जोड़िए।

रोचक तथ्य: नवरात्रा केवल एक बार नहीं आता

बहुत कम लोग जानते हैं कि हिंदू पंचांग में वर्ष के दौरान चार नवरात्र माने जाते हैं- चैत्र नवरात्र, आषाढ़ नवरात्र, आश्विन नवरात्र और माघ नवरात्रा। इनमें चैत्र और आश्विन नवरात्र आम जनजीवन में सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं, जबकि आषाढ़ और माघ के नवरात्रों को कई परंपराओं में गुप्त नवरात्र कहा जाता है।

एक और रोचक तथ्य : नवरात्रा और ऋतु परिवर्तन

चैत्र तथा शारदीय नवरात्र वर्ष की ऋतु-परिवर्तन की अवधियों के आसपास आते हैं। भारतीय परंपरा में इन समयों को साधना, संयम और आहार-विहार में अनुशासन से जोड़कर देखा गया है। इसी कारण नवरात्रा में व्रत और सात्त्विक भोजन की परंपरा विकसित हुई। हालांकि व्रत के स्वास्थ्य संबंधी प्रभाव व्यक्ति की आयु, स्वास्थ्य और भोजन पर निर्भर करते हैं, लेकिन सांस्कृतिक रूप से व्रत को इंद्रिय संयम और आत्मअनुशासन का माध्यम माना गया है।

कन्या पूजन का संदेश

अष्टमी या नवमी के दिन होने वाला कन्या पूजन नवरात्रा की महत्वपूर्ण परंपराओं में से एक है। कन्याओं को देवी स्वरूप मानकर उनका पूजन करके भोजन कराया जाता है। इस परंपरा में नारी शक्ति के सम्मान का सुंदर संदेश निहित है। जिस समाज में कन्या को देवी स्वरूप माना जाता है, वहां बेटियों के प्रति सम्मान केवल पर्व तक सीमित न रहकर व्यवहार और संस्कारों में भी दिखाई देना चाहिए।

राजस्थान में नवरात्रा का लोक रंग

राजस्थान की धरती पर नवरात्रा का स्वरूप और भी जीवंत दिखाई देता है। गांवों से लेकर शहरों तक देवी मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना, ज्योत, भजन, जागरण और सामूहिक आयोजन होते हैं। कई परिवार नवरात्रा में अपने कुलदेवी मंदिरों में जाकर दर्शन करते हैं। दूर-दराज रहने वाले परिवार भी इन दिनों अपने गांव और पैतृक स्थानों की ओर लौटते हैं। इस प्रकार धार्मिक पर्व परिवार और समाज को एक-दूसरे से जोड़ने का अवसर भी बन

Created by Universal Document Converter

जाता है। नवरात्रा की सबसे सुंदर विशेषताओं में से एक इसका सामूहिक स्वरूप है। मंदिरों में एक साथ बैठकर पूजा करना, भजन गाना, प्रसाद ग्रहण करना और सेवा कार्यों में भाग लेना समाज में आपसी सद्भाव और भाईचारे को मजबूत करता है। आज जब नई पीढ़ी आधुनिक जीवनशैली में तेजी से आगे बढ़ रही है, ऐसे पर्व उसे अपनी सांस्कृतिक पहचान से जोड़ने का महत्वपूर्ण माध्यम बन सकते हैं।

शक्ति की आराधना से आत्मशक्ति तक

नवरात्रा का वास्तविक संदेश केवल देवी की आराधना तक सीमित नहीं है। यह अपने भीतर की कमजोरियों पर विजय पाने का भी पर्व है। क्रोध पर संयम, निराशा पर आशा, अज्ञान पर ज्ञान, भय पर साहस और नकारात्मकता पर सकारात्मकता की विजय यही नवरात्रा का व्यापक आध्यात्मिक संदेश माना जा सकता है।

नई पीढ़ी को दें संस्कारों की विरासत

किसी भी समाज की पहचान केवल उसके इतिहास से नहीं, बल्कि इस बात से होती है कि वह अपनी परंपराओं को अगली पीढ़ी तक कितनी मजबूती से पहुंचाता है। नवरात्रा इसका एक सुंदर अवसर है। बच्चों को देवी के नौ स्वरूपों की जानकारी देना, कुलदेवी की कथा बताना, परिवार की परंपराओं से परिचित कराना और उन्हें मंदिर एवं सामाजिक आयोजनों में सहभागी बनाना- यह हमारी सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकता है।

-निकिता वर्मा, दमन, गुजरात

करवा चौथ

करवा चौथ भारतीय हिंदू संस्कृति का एक अत्यंत पावन और भव्य त्योहार है। यह पर्व मुख्य रूप से विवाहित स्त्रियों द्वारा अपने पति की लंबी उम्र, उत्तम स्वास्थ्य और सुखी वैवाहिक जीवन की कामना के लिए मनाया जाता है। यह त्योहार पति-पत्नी के अटूट प्रेम, त्याग, निष्ठा और समर्पण का प्रतीक है। हिंदू पंचांग के अनुसार, यह व्रत हर वर्ष कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को रखा जाता है।

करवा चौथ का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व



करवा चौथ का व्रत केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि दांपत्य जीवन के रिश्ते को प्रगाढ़ बनाने का अवसर है। 'करवा' का अर्थ होता है मिट्टी का छोटा बर्तन या लोटा, जिसका उपयोग पूजा और अर्घ्य देने के लिए किया जाता है, और 'चौथ' का अर्थ है चतुर्थी तिथि। इस दिन माता करवा, भगवान शिव, माता पार्वती, भगवान गणेश और कार्तिकेय की पूजा की जाती है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इस दिन श्रद्धापूर्वक व्रत रखने से अखंड सौभाग्य का वरदान मिलता है।

व्रत की परंपरा और विधि

करवा चौथ की शुरुआत तड़के सूर्योदय से पहले होती है।

- **सरगी का सेवन:** सास अपनी बहू को सूर्योदय से पूर्व 'सरगी' देती है, जिसमें मेवे, मिठाइयां और फल शामिल होते हैं। इसे ग्रहण कर महिलाएं अपने व्रत का संकल्प लेती हैं।
- **निर्जला उपवास:** पूरे दिन महिलाएं बिना अन्न और जल ग्रहण किए कड़ा 'निर्जला' व्रत रखती हैं।
- **सोलह श्रृंगार:** शाम को सुहागिन महिलाएं नए वस्त्र पहनकर सोलह श्रृंगार करती हैं और हाथों में मेहंदी लगाती हैं।
- **संध्या पूजा और कथा:** एक जगह एकत्रित होकर महिलाएं करवा चौथ की पौराणिक कथा सुनती हैं और सामूहिक रूप से थाली घुमाकर पूजा करती हैं।
- **चंद्र दर्शन और पारण:** चंद्रोदय के बाद महिलाएं छलनी से चंद्रमा और फिर अपने पति को देखती हैं। चंद्रमा को अर्घ्य देने के बाद पति अपने हाथों से पत्नी को जल पिलाकर व्रत पूरा कराते हैं।

पौराणिक कहानियां

इस पर्व से कई प्राचीन कथाएं जुड़ी हैं। सबसे प्रचलित कथा के अनुसार, करवा नाम की एक पतिव्रता स्त्री ने अपने सतीत्व के बल पर यमराज से अपने पति के प्राण वापस पा लिए थे। इसके अलावा, महाभारत काल में द्रौपदी द्वारा अर्जुन की रक्षा के लिए और माता पार्वती द्वारा शिव जी को प्राप्त करने के लिए भी इस प्रकार के तप व व्रत का उल्लेख मिलता है।

आधुनिक दौर में करवा चौथ

समय के साथ करवा चौथ का रूप और विस्तृत हुआ है। आज के दौर में केवल महिलाएं ही नहीं, बल्कि कई पुरुष भी अपनी पत्नियों के प्रति सम्मान और प्रेम प्रकट करने के लिए साथ में यह व्रत रखते हैं। यह त्योहार केवल परंपरा तक सीमित न रहकर प्रेम, त्याग, विश्वास और पारिवारिक एकता का का प्रतीक बन चुका है। बदलते समय के साथ इस त्योहार को मनाने के तरीकों में बदलाव आया है, लेकिन इसके पीछे छिपी भावनाएँ आज भी महत्वपूर्ण हैं। यह पर्व पति-पत्नी के रिश्ते में प्रेम और सम्मान को बढ़ाने का अवसर प्रदान करता है। इसी कारण करवा चौथ भारतीय संस्कृति और परंपराओं में एक विशेष स्थान रखता है।

- अमिता कुमावत

Created by Universal Document Converter

दीपावली से पहले कैसे करें घर की सफ़ाई

- घर खूबसूरत तभी नज़र आता है, जब वो साफ़-सुथरा होता है, इसलिए न सिर्फ़ घर के हर कमरे, बल्कि कोने-कोने की सफ़ाई अच्छी तरह करें।
- पानी में रॉक सॉल्ट (मोटा नमक) मिलाएं और इससे पूरे घर में पोंछा लगाएं। ऐसा करने से घर में मौजूद नकारात्मकता दूर हो जाती है।
- नमक मिले पानी से फर्श पोंछने के साथ-साथ फर्नीचर, अलमारी आदि की भी सफ़ाई करें। इससे गंदगी के साथ ही नकारात्मकता दूर हो जाती है।
- घर में रखे हुए मेटल के डेकोरेटिव आइटम्स को भी भीगे कपड़े से पोंछें ताकि चिपकी धूल-मिट्टी साफ़ हो जाए।
- फर्श की तरह सीलिंग की सफ़ाई का भी ध्यान रखें। सीलिंग पर मकड़ी के जाले न लगने दें।
- घर में अनुपयोगी चीज़ों का ढेर न लगाएं। बंद पड़े पुराने इलेक्ट्रॉनिक आइटम्स, पुराने कैलेंडर्स, अख़बार आदि हटा दें। इनसे घर में सकारात्मक ऊर्जा के संचार में रुकावट आती है।
- घर में कम से कम फर्नीचर रखें। कोशिश करें कि आपका घर खुला-खुला दिखे और घर में सूर्य की रोशनी भी भरपूर आए।
- घर में भारी-भरकम डेकोरेटिव आइटम्स की भीड़ न लगाएं। कम से कम डेकोरेटिव आइटम्स रखें, जो दिखने में खूबसूरत हो और ज़्यादा जगह न घेरें।
- घर में सकारात्मक ऊर्जा की मौजूदगी से सुख, सौभाग्य और समृद्धि प्राप्त होती है। मेहमानों की तरह सकारात्मक ऊर्जा भी मुख्य द्वार से प्रवेश करती है इसलिए मुख्य द्वार की न सिर्फ़ सजावट, बल्कि साफ-सफ़ाई पर भी ध्यान दें।
- घर की साफ़-सफ़ाई करने के बाद घर में गंगा जल या गो मूत्र का छिड़काव ज़रूर करें। इससे आपका घर पूरी तरह पवित्र हो जाएगा।
- घर का माहौल पवित्र बनाने के लिए साफ-सफ़ाई के बाद सुगंधित धूपबत्ती व अगरबत्ती भी ज़रूर जलाएं।

रसोईघर को यूं साफ रखें...

- किचन के दाग-धब्बों को दूर करने के लिए वाशिंग पाउडर में बैकिंग सोडा डालकर इस्तेमाल करें।
- सिंक को क्लीन करने लिए नींबू का इस्तेमाल करें। साफ़ होने के साथ खुशबू भी अच्छी आएगी।
- किचन से मक्खियों को भगाने के लिए एक कटोरी में सिरका व बर्तन धोनेवाला साबुन मिलाकर रख दें।
- बेकिंग ट्रे की गंदगी को साफ़ करने के लिए बेकिंग पाउडर में पानी मिलाकर पेस्ट बना लें। इस पेस्ट को गंदगी वाली जगहों पर लगाकर रातभर यूं ही रहने दें। अगले दिन नर्म कपड़े से क्लीन कर लें।
- डस्टबिन के ऊपरी हिस्से को स्क्रब, ब्रश या टूथब्रश से क्लीन करने के बाद डिश सोप व गर्म पानी से साफ़ कर लें।
- कटिंग बोर्ड को क्लीन करने के लिए नमक छिड़ककर नींबू से साफ़ करें।
- घर के कूड़ा-कचरा को नियमित रूप से रोज़ बाहर निकालें।

रावण से लक्ष्मण ने नीति की शिक्षा ली



राम-रावण का महायुद्ध समाप्त हो चुका था। रावण मृत्यु शैया पर पड़ा था। श्रीराम ने उसका अंतिम समय जान अनुज लक्ष्मण से कहा-जाओ, अपने समय का एक श्रेष्ठ विद्वान पंडित अपनी अन्तिम सांसें गिन रहा है। जाकर उससे कुछ शिक्षा लो। लक्ष्मण जी गए। उन्होंने रावण के पास जाकर तीन बार प्रार्थना की कि वह उन्हें नीति की शिक्षा दें, लेकिन रावण ने एक शब्द भी नहीं कहा। वह चुपचाप देखता रहा। लक्ष्मण वापस लौटे तो श्रीराम ने पूछा-क्या सीखकर आए? लक्ष्मण ने सारी वस्तु स्थिति बतला दी। तब श्रीराम ने उन्हें समझाते हुए कहा-तुम रावण को शत्रु समझकर उसके पास गये थे तथा तुम्हारा निवेदन भाव भी वही था। अब एक शिष्य की तरह उसके पास जाओ, जाकर उसे प्रणाम करो, शीश नवाओ, उसकी प्रदक्षिणा करो और जब अपनी बात कहो। लक्ष्मण ने जाकर ऐसा ही किया। अब लक्ष्मण के आचरण से संतुष्ट रावण ने नीति की शिक्षा दी। लक्ष्मण को काफी देर तक नीति-उपदेश देने के बाद रावण ने कहा-'लक्ष्मण मैं अपने जीवन में चार काम करना चाहता था, जो मैं नहीं कर पाया। **पहला** अपनी लंका के आसपास का सौ योजन समुद्र मीठा कर दूँ। **दूसरा** अपनी सोने की लंका को सुगन्धित कर दूँ। **तीसरा** स्वर्ग के लिये सीढ़ियाँ बनवा दूँ। **चौथा** मृत्यु अपने वश में कर लूँ। यह कहकर रावण थोड़ी देर के लिये चुप हो गया। फिर उसने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा-लक्ष्मण मेरा बल-वैभव अपार था। मैं ये चारों काम कर सकता था। पर इसलिये नहीं कर पाया क्योंकि मैं इन्हें छोटा समझकर टालता रहा। यही कारण है कि आज मन के अरमान मन में रखकर इस संसार से जा रहा हूँ। किसी भी काम की उपेक्षा करना, उसे टालना, उसे छोटा मान लेना, जो काम आज कर सकते हैं उसे कल के लिये छोड़ देना मनुष्य की सबसे बड़ी भूल है। मैं जो करना चाहता था वह नहीं किया। मुझे अपनी इस भूल का दुःख है। लक्ष्मण, तुम्हें मेरा परामर्श यही है कि तुम यह गलती कभी मत करना। इतना कहकर रावण के नेत्र बंद हो गये। लक्ष्मण ने नीति-उपदेश ग्रहण कर रावण की पार्थिव देह को नमन किया और अपने शिविर में वापस लौट आए।

-प्रो. बी. के. कुमावत, सेवानिवृत्त प्राचार्य

Created by Universal Document Converter

भारत में एकीकरण के शिल्पकार : सरदार पटेल

31 अक्टूबर 1875 को करमसद गांव, नडियार, गुजरात में झवेरी भाई के किसान परिवार में वल्लभ भाई पटेल का जन्म हुआ। वे छोटी उम्र से ही निडर और सहिष्णु थे। अध्ययन पूर्ण कर वर्ष 1900 में गोधरा में वकालत प्रारम्भ की फिर वर्ष 1910 में लंदन जाकर बैरिएस्टर की परीक्षा उत्तीर्ण की। वहां से लौटकर वर्ष 1913 में भारत लौटे और अहमदाबाद में बेरिस्टरी शुरू की। वे गांधीजी से प्रभावित थे तथा उनसे वर्ष 1917 में मिले तथा उनके अनुयायी बन गये। इसके बाद उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन को महत्व दिया। वर्ष 1918 में सूखा प्रभावित खेड़ा में किसानों के साथ ब्रिटिश करों के विरोध में अहिंसक आन्दोलन में उतर गये। पटेल की नेतृत्व एवं संगठन क्षमता के कारण ब्रिटिश करों को माफ करना पड़ा। यह अहिंसक आंदोलन की पहली जीत थी।



वर्ष 1920 में कांग्रेस ने असहयोग आंदोलन प्रारम्भ करने का निर्णय लिया तो वल्लभ भाई पटेल ने तुरन्त बेरिस्टरी छोड़ दी तथा अपने बच्चों को सरकारी शिक्षण संस्थाओं में पढ़वाना बंद कर दिया तथा असहयोग आंदोलन में कूद पड़े। असहयोग आंदोलन में सरकारी संस्थाओं से पढ़ाई छोड़ने वाले विद्यार्थियों के लिए गुजरात विद्यापीठ की स्थापना की।

बारदौली में अंग्रेज सरकार ने 22 प्रतिशत कर बढ़ा दिये। इससे वहां के अनपढ़ किंतु परीश्रमी किसान बहुत परेशान व असहाय हो गये। साथ ही शराब कारोबारी पारसियों एवं कर्ज देने वाले साहूकारों द्वारा वहां के किसान लूटे जाते थे। किसानों ने पटेल से सम्पर्क किया। पटेल ने किसानों को संगठित एवं जाग्रत करने का निश्चय किया। उन्होंने किसानों से कहा कि वे बढ़े हुए कर को रद्द कराना चाहते हैं तो जोरदार आंदोलन करना होगा तथा सरकार कुछ भी करे डरना नहीं। उन्होंने महिलाओं को भी जोड़ दिया। इसके बाद कर बंदी की घोषणा कर दी। सरकार ने अनेक प्रयास किये पर संगठित किसानों को झुका नहीं सके। अन्तत: किसानों की सभी मांगे मान ली गई। सारे भारत में 'बारदौली सत्याग्रह' का यश छा गया। इस आंदोलन ने वल्लभ भाई पटेल को 'सरदार' बना दिया।

1930 के नमक सत्याग्रह से पहले ही पटेल दाण्डी के आसपास गांवों में जन-जागरण के लिए पहुंच गये तथा उनके कारण दाण्डी यात्रा सफल हुई। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया, वे आंतों में संक्रमण से पीड़ित भी हुए पर पटेल का मनोबल तोड़ नहीं सके।

वर्ष 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भी पटेल सक्रिय रह कर कार्य करते रहे। उन्हें फिर गिरफ्तार कर लिया गया तथा 9-10 माह बाद रिहा हुए। अब अंग्रेजों को अनुमान हो गया था कि वे लम्बे समय तक भारत पर शासन नहीं कर पायेंगे। उन्होंने भारत का शासन छोड़ने का मन बना लिया। किन्तु उन्होंने भारत का विभाजन किया तथा 565 देशी रियासतों को स्वतंत्र कर दिया। इससे लाखों लोगों के विस्थापन की समस्या उत्पन्न हो गई तथा देशी रियासतों का भारत संघ में विलय की चुनौती खड़ी हो गई। किन्तु सरदार पटेल ने अपनी विलक्षण बुद्धि एवं साहस से एक वर्ष के भीतर अधिकांश रियासतों का शांतिपूर्ण तरीके से भारत में विलय कर लिया। केवल जूनागढ़ एवं हैदराबार रियासतें पाकिस्तान में मिलना चाह रही थी जिनके विरुद्ध सिपाही कार्यवाही कर भारत में विलीन किया। केवल कश्मीर रियासत बच गई तथा पाकिस्तान सेना ने कबाईलियों के वेश में कश्मीर पर आक्रमण कर अधिकांश भू भाग पर कब्जा कर लिया। पटेल ने वहां अपनी सेना भेजकर उन्हें खदेड़ा और बाकी भू भाग से भी खदेड़ पाते उससे पहले नेहरू इस मुद्दे का संयुक्त राष्ट्र में ले गये तथा अन्तर्राष्ट्रीय विवाद होने से नेहरू ने यह मामला अपने पास ले लिया और हमारे कश्मीर के एक भाग पर पाकिस्तान का अनाधिकृत कब्जा हो गया जो आज तक बरकरार है।

वर्ष 1947 में पटेल सौराष्ट्र के दौरे पर गये, वहां सोमनाथ मंदिर की दुर्दशा देख कर दु:खी हुए। उन्होंने तब इसके पुनर्निर्माण का संकल्प लिया। उन्होंने शीघ्र ही सोमनाथ मंदिर बोर्ड गठित करके पुन: एक गौरवशाली मंदिर का निर्माण कराया।

सरदार पटेल का जीवन राष्ट्र के लिए सदैव समर्पित रहा तथा देश की एकता और अखण्डता सुनिश्चित करने में अपना जीवन बलिदान कर दिया। उनका निधन 15 दिसम्बर 1950 को हो गया। वर्ष 1991 में उन्हें मरणोपरांत 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। उनकी स्मृति में केवडिया, गुजरात में विश्व की सबसे बड़ी उनकी प्रतिमा ''स्टेच्यू ऑफ यूनिटी'' स्थापित की गई है। 31 अक्टूबर को लोह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती पर सादर नमन।

कुराड़ा की कौशल्या ने नेट क्रैक की



हरनावा। ग्राम कुराड़ा, कुमावतों की ढाणी निवासी कौशल्या कुमावत ने नेट परीक्षा में 98.17% अंक प्राप्त कर समाज और गांव का नाम रोशन किया है। कौशल्या अपने गांव और समाज की पहली गृहिणी हैं, जिन्होंने पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए यूजीसी नेट में यह सफलता पाई है और **पीएचडी तथा असिस्टेंट प्रोफेसर के लिए पात्रता हासिल की है।** कौशल्या ने दो बच्चों के लालन-पालन, घर के कामकाज और सासू मां सुखली देवी की सेवा के साथ बिना किसी कोचिंग के घर पर ही स्वाध्याय कर यह मुकाम अपने दूसरे प्रयास में हासिल किया। इन्हें पॉलिटेक्निक इंजीनियर पति गजानन कुमावत का साथ रहा जिन्होंने मजबूत इरादे, सकारात्मक सोच और कड़ी मेहनत से यह मुकाम हासिल करना सम्भव हुआ। **हार्दिक बधाई।**

Created by Universal Document Converter

अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस: समाज के शिल्पकारों का सम्मान और हमारी नैतिक जिम्मेदारी

विश्वभर में अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस (International Day of Older Persons) मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 14 दिसंबर 1990 को एक ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित करके इस दिवस की शुरुआत की गई थी, जिसके बाद पहली बार 1 अक्टूबर 1991 को यह दिवस आधिकारिक रूप से मनाया गया। इस विशेष दिन को मनाने का मुख्य उद्देश्य समाज में बुजुर्गों के बहुमूल्य योगदान को स्वीकार करना, उनके प्रति सम्मान और कृतज्ञता प्रकट करना तथा बढ़ती उम्र के साथ उनके सामने आने वाली विविध चुनौतियों के प्रति वैश्विक स्तर पर संवेदनशीलता और जागरूकता बढ़ाना है।

सांस्कृतिक संदर्भ और ऐतिहासिक महत्व

भारतीय संस्कृति में बुजुर्गों को परिवार और समाज की रीढ़ माना गया है। **'वसुधैव कुटुंबकम'** और **'मातृदेवो भव, पितृदेवो भव'** की भावना से ओतप्रोत हमारी परंपरा में वरिष्ठ नागरिक केवल आयु में बड़े नहीं होते, बल्कि वे अनुभवों का जीवंत कोष, ज्ञान के स्रोत और भावी पीढ़ियों के मार्गदर्शक होते हैं। उनके द्वारा दिए गए संस्कार, जीवन-मूल्य और नैतिक दृष्टिकोण किसी भी समृद्ध समाज का आधार बनते हैं। आधुनिक युग में चिकित्सा विज्ञान और स्वास्थ्य सुविधाओं की प्रगति के कारण औसत जीवन प्रत्याशा (Life Expectancy) बढ़ी है, जिससे विश्वभर में वृद्धजनों की आबादी का प्रतिशत भी तेजी से बढ़ रहा है। ऐसे में यह दिवस हमें स्मरण कराता है कि बुजुर्ग समाज के लिए कोई दायित्व नहीं, बल्कि एक अमूल्य और वंदनीय धरोहर हैं।



आधुनिक दौर में बुजुर्गों के समक्ष चुनौतियाँ

वैश्वीकरण, औद्योगिकीकरण और एकल परिवारों (Nuclear Families) के बढ़ते चलन ने सामाजिक संरचना में गहरा बदलाव किया है। इस भागदौड़ भरी जीवनशैली के कारण आज कई वरिष्ठ नागरिक गंभीर समस्याओं का सामना करने को विवश हैं:

अकेलापन और भावनात्मक उपेक्षा: युवाओं के रोज़गार, विदेश प्रवास या व्यस्तताओं के चलते घर के बड़े-बुजुर्ग स्वयं को एकाकी महसूस करने लगते हैं। संवाद की कमी उन्हें मानसिक और भावनात्मक रूप से तोड़ देती है।

स्वास्थ्य और शारीरिक समस्याएँ: ढलती उम्र के साथ जोड़ों का दर्द, हृदय रोग, मधुमेह के साथ-साथ अल्जाइमर और डिमेंशिया जैसी मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ आम हो जाती हैं, जिनके लिए निरंतर देखभाल और आत्मीयता की आवश्यकता होती है।

वित्तीय एवं सामाजिक असुरक्षा: पेंशन की अनुपलब्धता, बढ़ती चिकित्सा लागत और आय के नियमित स्रोतों के अभाव में कई वृद्धजन आर्थिक रूप से असुरक्षित महसूस करते हैं, जो उनके आत्म-सम्मान को प्रभावित करता है।

हमारा दायित्व और समाधान के मार्ग

अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस केवल एक औपचारिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह हम सभी को अपनी जिम्मेदारियों का पुनर्मूल्यांकन करने का संदेश देता है। एक संवेदनशील और प्रगतिशील समाज के निर्माण हेतु निम्नलिखित कदम उगने आवश्यक हैं:

1. समय और संवाद: बुजुर्गों के लिए सबसे बड़ी औषधि अपनों का साथ और प्रेम है। उनके साथ समय बिताएं, उनके अनुभवों को सुनें और उन्हें परिवार के निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में शामिल करें।

2. सुलभ स्वास्थ्य और सुरक्षा सुविधाएँ: सरकारों और सामाजिक संगठनों को वरिष्ठ नागरिकों के लिए नि:शुल्क व सुलभ स्वास्थ्य सेवाएँ, पेंशन योजनाएँ और हेल्पलाइन प्रणालियाँ सुनिश्चित करनी चाहिए।

3. कानूनी व सामाजिक सुरक्षा: भारत सरकार द्वारा पारित 'माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण एवं कल्याण अधिनियम' जैसे कानूनों का कड़ाई से पालन होना चाहिए, ताकि कोई भी बुजुर्ग अपनी ही संतानों द्वारा प्रताड़ित न हो सके।

निष्कर्ष : वृद्धजन हमारे अतीत के निर्माता और वर्तमान के मार्गदर्शक हैं। जिस घर और समाज में बुजुर्गों की उपेक्षा होती है, वह अपनी जड़ों से कट जाता है। आइए, इस अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर हम यह संकल्प लें कि अपने घरों और समाज के प्रत्येक वरिष्ठ नागरिक को गरिमा, प्रेम, उत्तम स्वास्थ्य सुविधा और सम्मान से परिपूर्ण जीवन प्रदान करेंगे।

बढ़ती उम्र में अकेलापन और डिप्रेशन (अवसाद) केवल मानसिक स्थिति को ही नहीं, बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करते हैं। सही दिनचर्या, सामाजिक जुड़ाव और आत्मीय देखभाल के जरिए इस समस्या से आसानी से उबरा जा सकता है।

वृद्धजन स्वयं भी अकेलापन और डिप्रेशन दूर करने और स्वास्थ्य के लिए ये उपाय अपना सकते हैं-

सामाजिक जुड़ाव और संवाद बढ़ाएं

- परिवार और दोस्तों के साथ समय: प्रतिदिन अपनों से बात करें, भले ही वह फोन या वीडियो कॉल पर ही क्यों न हो।
- सीनियर सिटीजन ग्रुप्स: अपने आसपास के वरिष्ठ नागरिक

Created by Universal Document Converter

क्लबों या पार्कों में जाकर हमउम्र लोगों से मिलें और अनुभव साझा करें।

दिनचर्या को सक्रिय और अर्थपूर्ण बनाएं

- बागबानी (Gardening), संगीत सुनना, पढ़ना, पेंटिंग या खाना पकाने जैसी गतिविधियों में मन लगाएं।
- स्मार्टफोन, सोशल मीडिया या वीडियो कॉलिंग जैसी बुनियादी तकनीक सीखें ताकि बच्चों और पोते-पोतियों से जुड़े रह सकें।

शारीरिक स्वास्थ्य और योग का सहारा लें

- हल्का व्यायाम और टहलना: रोजाना सुबह या शाम 20-30 मिनट पार्क में टहलने से शरीर में 'हैप्पी हार्मोन्स' (Endorphins) बनते हैं जो मूड को बेहतर बनाते हैं।
- प्राणायाम और ध्यान: ध्यान (Meditation) और अनुलोम-विलोम जैसे प्राणायाम मानसिक शांति प्रदान करते हैं और तनाव दूर करते हैं।

सामाजिक सेवा और स्वयंसेवा (Volunteering)

- पास के किसी एनजीओ, पुस्तकालय या स्थानीय समुदाय में अपनी क्षमता अनुसार योगदान दें। दूसरों की मदद करने की भावना से जीवन में एक नया उद्देश्य मिलता है।

पौष्टिक आहार और पर्याप्त नींद

- संतुलित भोजन: ओमेगा-3 फैटी एसिड, हरी सब्जियां और फलों को आहार में शामिल करें, जो मस्तिष्क के स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद हैं।
- नियमित नींद: रोजाना 7-8 घंटे की गहरी और नियमित नींद लें।

पेशेवर मदद (Professional Help) लें

- यदि उदासी लंबे समय तक बनी रहे, भूख या नींद में भारी कमी आए, तो बिना झिझक किसी काउंसलर, मनोचिकित्सक या डॉक्टर से संपर्क करें।

मुख्य आहार संबंधी नियम

- मांसपेशियों को कमजोर होने से बचाने के लिए दालें, पनीर और दूध उत्पाद शामिल करें। हड्डियों की मजबूती के लिए कैल्शियम आवश्यक है।
- फाइबर की पर्याप्त मात्रा: कब्ज की समस्या से बचने के लिए छिलके वाली दालें, हरी सब्जियां (पालक, लौकी, तोरई) और फल नियमित रूप से लें।
- दिनभर में 7-8 गिलास तरल पदार्थ (पानी, छाछ, सूप) पिएं, क्योंकि उम्र के साथ प्यास का अहसास कम होने लगता है।
- उच्च रक्तचाप और डायबिटीज से बचाव के लिए नमक, चीनी और अत्यधिक तेल-मसाले से परहेज करें।
- भोजन का रूप: यदि चबाने में कठिनाई हो, तो भोजन को थोड़ा मैश (मसला हुआ) करके या सूप के रूप में दें।

वृद्धजन अपने दैनिक भोजन में निम्न चीजें ले सकते हैं:-

सुबह (6:30 - 7:30 AM)	1 गिलास गुनगुना पानी (या मेथी/जीरा पानी) + 4-5 भीगे बादाम व 1 अखरोट	पाचन में सुधार और मस्तिष्क के लिए ओमेगा-3
नाश्ता (8:30 - 9:30 AM)	दलिया / ओट्स / सूजी उपमा / पोहा / बेसन चीला + 1 कप टोंड दूध या हर्बल चाय	फाइबर और ऊर्जा का अच्छा स्रोत
मिड-मॉर्निंग (11:00 AM)	कोई एक मौसमी फल (पपीता, सेब, अमरूद) या नारियल पानी	विटामिन, मिनरल्स और हाइड्रेशन
दोपहर का खाना (1:00 - 2:00 PM)	2 नरम रोटी (मल्टीग्रेन) / 1 कटोरी उबले चावल + 1 कटोरी पतली दाल + हरी सब्जी + 1 कटोरी दही/छाछ	प्रोटीन, कैल्शियम और आंतों के स्वास्थ्य के लिए प्रोबायोटिक
शाम की चाय (5:00 PM)	1 कप ग्रीन टी / बिना चीनी की चाय + भुने मखाने / भुना चना	हल्का स्नैक, वजन और बीपी नियंत्रण
रात का खाना (7:30 - 8:30 PM)		खिचड़ी / दलिए की सब्जी वाली दलिया / लौकी की सब्जी और 1-2 नरम रोटी पचने में बेहद आसान और सुपाच्य
सोने से पहले (9:30 PM)	1 कप गुनगुना हल्दी वाला दूध (कम वसा वाला)	अच्छी नींद, इम्युनिटी और जोड़ों के दर्द में राहत

नोट : वृद्धजन यदि किसी बीमारी से ग्रस्त हैं तो खान-पान हेतु डॉक्टर की सलाह अवश्य लें।

Created by Universal Document Converter

वि/1 श्री महेश चन्द जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/2 श्री नीरज धुन्धारिया, आनन्दपुरी, जयपुर
वि/3 श्री मनीष खोवाल कुमावत एडवोकेट, जयपुर
वि/4 श्री मनोज कुमार सिरसवा, जयपुर
वि/5 श्री शंकर लाल जायलवाल, टोंक रोड, जयपुर
वि/6 श्री यतेन्द्र अजमेरा, त्रिमूर्ती सर्किल, जयपुर
वि/7 श्री राकेश चन्द सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/8 श्री संदीप नागा, बापू नगर, जयपुर
वि/9 श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा, भौरोदिया जयपुर
वि/10 श्री मोहन कुमार घोड़ीवाल, जयपुर
वि/11 श्री नवल सरथल्या, महावीर नगर, जयपुर
वि/12 श्री पंकज कुमावत, वैरा झोटवाड़ा, जयपुर
वि/13 श्री चेतन कुमावत, डीसीएम, जयपुर
वि/14 श्री मनोज माचीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/15 श्री दीपक सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/16 श्री लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल, जयपुर
वि/17 श्री योगेश वर्मा, खड़गटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/18 श्री शैलेन्द्र खटगटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/19 श्री विनोद बालोदिया, दुर्गापुरा जयपुर (स्व.)
वि/20 श्री ओमकार मल घोड़ेला, रींगस रोड, जयपुर
वि/21 श्री रामपाल मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/22 श्री रामप्रकाश बेरा, मुरलीपुरा, जयपुर
वि/23 श्री मोहनलाल घोड़ेला, नींदड़, जयपुर
वि/24 श्री कालूराम होदकास्या, नींदड़, जयपुर
वि/25 श्री जयनारायण मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/26 श्री महेंद्र खरोलिया, चांदपोल बाजार, जयपुर
वि/27 डॉ. सीताराम नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/28 श्री शंकरलाल मामोड़िया, 22 गोदाम, जयपुर
वि/29 श्री रामस्वरूप खोराणिया, जयपुर
वि/30 श्री नरेंद्र कुमार आर्य, ब्यावर, अजमेर
वि/31 श्री चेनसुख बड़ीवाल, बगरू, जयपुर
वि/32 श्री चांदमल कुमावत (घोड़ेला), मुंबई
वि/33 श्री राजसिंह गैदर, पांचावाला, जयपुर
वि/34 श्री मनोज ब्याडवाल, श्रीराम नगर, झोटवाड़ा
वि/35 श्री गोपाल मारवाल, श्रीमाधोपुर, सीकर
वि/36 श्री मनीष मारवाल, निवारू रोड, जयपुर
वि/37 श्रीरूप सिंह कारगवाल, जयपुर
वि/38 श्री दया प्रकाश जलांधरा, इंदौर
वि/39 श्री नवीन कुमार वर्मा भौंरोदिया, इंदौर
वि/40 श्री राजेंद्र प्रसाद, तमिलनाडु
वि/41 श्री शिव भगवान चेजारा, सिरस्वा, सीकर
वि/42 श्री तेज प्रकाश नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/43 श्री पृथ्वीराज जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/44 श्री मोहन कुमार बालोदिया, जयपुर
वि/45 श्री पुरुषोत्तम लाल घोड़ेला, जयपुर
वि/46 श्री ललित स्वरूप पोडेला, जयपुर
वि/47 श्री विजय कुमावत (भौरोंदिया), जयपुर
वि/48 श्री अरविंद सिरस्वा, पचार, सीकर
वि/49 श्री मूलचंद खोवाल, जयपुर
वि/50 श्रीमती शशि वर्मा, धुमुनिया, दुर्गापुरा, जयपुर
वि/51 श्री राजेंद्र जूनवाल, टोंक फाटक, जयपुर
वि/52 श्री सतीश चंद खाटूवाल, जयपुर

विशिष्ट संरक्षक

वि/53 श्री नन्द किशोर सिरस्वा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/54 श्री संतोष खरनारिया कुमावत, अजमेर
वि/55 श्री प्रमोद कुडावलिया, छत्तीसगढ़,
वि/56 श्री मनोज बड़ीवाल, रायपुर, छत्तीसगढ़
वि/57 श्री श्रीराम नीमिवाल, जयपुर
वि/58 श्री भीवाराम दम्बीवाल, निर्माण नगर, जयपुर
वि/59 श्री पन्नालाल सिरस्वा, निर्माण नगर, जयपुर
वि/60 श्री रामस्वरूप कुमावत, बड़ीवाल, मुम्बई
वि/61 श्री हेमेंद्र सिंह गैदर, टोंक रोड, जयपुर
वि/62 श्री साधुलाल चेजारा (सिरस्वा), जयपुर
वि/63 श्री गोपाललाल बासनीवाल, जयपुर
वि/64 श्री मोहनलाल मामोड़िया, जयपुर
वि/65 श्री रामकुमार बिरथलिया, जयपुर
वि/66 श्री जगदीश कुमावत
वि/67 श्री मुकेश कु. कुदीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/68 श्री रोहिताश मोरवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/69 श्री शुभकरण किरोड़ीवाल, सूरत
वि/70 श्री नान्छीलाल कुद्दीवाल, जयपुर
वि/71 श्री रमेश चंद माचीवाल, त्रिनगर, दिल्ली
वि/72 श्री राधेश्याम घासोलिया, दिल्ली
वि/73 श्री हंसराज मारवाल, ब्यावर
वि/74 श्री मेघराज सिरस्वा, छत्तीसगढ़
वि/75 श्री सूरजमल अनावड़िया, लाल कोठी, जयपुर
वि/76 श्री छीतरमल धुंधारिया, निवारू रोड, जयपुर
वि/77 श्री रामगोपाल खोराणिया, सोडाला, जयपुर
वि/78 श्री हरिशंकर राजौरा, जयपुर
वि/80 डॉ. प्रवीण कुमार मारवाल, झुंझुनूं
वि/81 श्री अर्जुन लाल धुन्धारिया, जयपुर
वि/82 श्री ओम प्रकाश धुन्धारिया, जयपुर
वि/83 श्री गोविंद नारायण तांगड़ा, जयपुर
वि/84 श्री सुरेंद्र सिंह तारकसी, बापू नगर, जयपुर
वि/85 श्री माधव दास बालोदिया, जयपुर
वि/86 श्री मोहित धुन्धारिया, जयपुर
वि/87 श्री बाबूलाल मंडावरा, जयपुर
वि/88 श्री मनीष वर्मा (सिरस्वा), दुर्गापुरा, जयपुर
वि/89 श्री हेमांक खड़गटा, मोती डूंगरी, जयपुर
वि/90 श्री कैलाश जलान्धरा, माल की ढाणी, दूदू
वि/91 श्री लोकेश जंहाजपुरिया, नंदपुरी, जयपुर
वि/92 श्री नन्दकिशोर आसीवाल, रिंगस, सीकर
वि/93 श्री बाबूलाल धुन्धारिया, वीकेआई, जयपुर
वि/94 श्री रामसिंह बैथाड़िया, तुलसी सेन्ट्रल मैन बाजार, सांगानेर
वि/95 श्री मदन लाल कुमावत, निर्माण नगर, जयपुर
वि/96 श्री नरेंद्र मामोडिया, अशोक नगर, उदयपुर
वि/97 श्री बाबूलाल कुमावत, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/98 श्री रमेश मारवाल, खातीपुरा, जयपुर
वि/99 श्री प्रहलाद नारायण कुमावत, जयपुर
वि/100 श्री सत्यनारायण कुमावत, जयपुर
वि/101 श्री दीपेश टी. मॅडावरा, जयपुर
वि/102 श्री राकेश कुमावत (एडवोकेट), बरकत नगर, जयपुर
वि/103 श्री ओमप्रकाश कुमावत, जयपुर
वि/104 श्री रमेश चन्द ब्याड़वाल, नई दिल्ली
वि/105 डॉ. एन.के. कुमावत, लालकोठी, जयपुर
वि/106 श्री राम प्रसाद छापोला, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/107 श्री गिरधारी लाल सिंघनवाल, उदयपुर
वि/108 श्री राकेश कुमावत (धनारिया), उदयपुर
वि/109 श्री बाबूलाल वर्मा (ब्याड़वाल), नई दिल्ली
वि/110 श्री कन्हैयालाल खण्डारिया, जयपुर
वि/111 डॉ. महेश कुमार जालवाल, जयपुर
वि/112 डॉ. श्रीमती श्यामा कुमावत, उदयपुर
वि/113 श्री महेश कुमार कुमावत, किशनगढ़
वि/114 श्री मुकेश वर्मा (मरोड़िया), जयपुर
वि/115 श्री जयकिशन कुमावत (सोकिल), चौमूं
वि/116 श्री गजेंद्र मारवाल, सांगानेर, जयपुर
वि/117 श्री सुनील तोंदवाल, वीकेआई, जयपुर
वि/118 श्री मदनलाल जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/119 श्री सुमित कुमार घोड़ेला, मुंबई
वि/120 श्री ओम प्रकाश का कारगवाल, ब्यावर
वि/121 श्री प्रेमचन्द कुमावत (बैरा), झोटवाड़ा, जयपुर
वि/122 श्री योगेश वर्मा, मुम्बई
वि/123 श्री राजेश धूंधारिया, ढूंडलोद कॉलोनी, जयपुर
वि/124 श्री सुनील प्रकाश वर्मा, मुम्बई
वि/125 श्री उम्मेद सिंह नन्दीवाल पुत्र श्री जी.एस. नन्दीवाल, जयपुर
वि/126 श्री रामलाल बैथाड़िया
वि/127 श्री लोकेन्द्र बालोदिया, जयपुर
वि/128 श्री कुमार गौरव कुमावत, कोटा
वि/129 श्रीमती मेघना कुमावत, जयपुर
वि/130 श्री गोपाल लाल कुण्डलवाल, जयपुर
वि/131 श्री दामोदर लाल जलान्दरा, जयपुर
वि/132 डॉ. पी.एम. कुमावत, उज्जैन
वि/133 श्री विमल कुमावत, जयपुर
वि/134 श्री महेन्द्र सिंह, बापूनगर, जयपुर
वि/135 श्री गोपाल लाल-सीताराम, जयपुर
वि/136 श्री रुपेश मारोठिया, बरकतनगर, जयपुर
वि/137 श्री घनश्याम देवतवाल, पटेल कॉलोनी, जयपुर
वि/138 श्री लक्ष्मीनारायण सिरस्वा, मुरलीपुरा, जयपुर
वि/139 श्री प्रहलादराय नोखवाल, भदाल, गोविन्दगढ़
वि/140 श्री घनश्याम खाटूवाल, ढोडसर
वि/141 श्री मुकेश कारगवाल, बरकत नगर, जयपुर
वि/142 श्री कैलाश खटोड़, गजसिंहपुरा, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर
वि/143 श्री संजीव कुमार वर्मा, मानसरोवर एक्स., जयपुर
वि/144 श्री रामेश्वर बम्बोरिया, पवन टॉवर, सोडाला, जयपुर
वि/145 श्री राकेश कुमावत,(आसीवाल), बनीपार्क, जयपुर
वि/146 श्री यतेन्द्र सिंह, खिरणी फाटक, जयपुर
वि/147 श्री प्रारूप कुमावत, रांकड़ी, जयपुर
वि/148 श्री शिवदयाल धुंधारिया, सीकर रोड, जयपुर
वि/149 श्री छीतरमल मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/150 श्री कैलाश घोड़ावड़, सूरत
वि/151 श्री गणेश लाल कुमावत, देवी नगर, जयपुर
वि/152 श्री ओम प्रकाश वर्मा, अलथान रोड, सूरत
वि/153 डॉ. अनूप कुमावत, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/154 श्री महेश जोहरी, लालकोठी, जयपुर
वि/155 श्री सोभाग्य चंद्र कुमावत, लालकोठी, जयपुर
वि/156 डॉ. डी.एम. कुमावत, उज्जैन
वि/157 श्री वीरेन्द्र सिंह तारकशी, लक्ष्मी आभूषण मंदिर, जयपुर

''कुमावत इंडिया'' पत्रिका परिवार की ओर से सभी दिवंगत आत्माओं को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

22 अगस्त श्री गिरधारी लाल ठेकेदार लोहरवाड़िया, मनोहरपुर
22 अगस्त शशिकला वर्मा, पत्नी स्व. रामेश्वरलाल तोंदवाल, जयपुर
23 अगस्त श्रीमती तीजा देवी पत्नी स्व. सूरजमल मारवाल, उदयपुरिया
24 अगस्त श्रीमती मीना कुमावत, शास्त्री नगर, जयपुर
24 अगस्त श्री राम सहाय कुमावत बासनीवाल, जयपुर
27 अगस्त श्री शंकरलाल कुमावत पुत्र स्व. श्री रामनारायण राहोरिया, जयपुर
28 अगस्त श्री सतीश प्रकाश वर्मा पुत्र स्व. श्री नानगराम उदयवाल, जयपुर
29 अगस्त श्री मोतीलाल कुमावत ऊँटवाल
1 सितम्बर श्रीराम प्रकाश वर्मा पुत्र स्व. श्री दयानन्द खोरानिणया, जयपुर
5 सितम्बर श्री बृजमोहन राज कुमावत पुत्र स्व. श्री मोतीलाल जालवाल, नन्दपुरी, जयपुर
6 सितम्बर श्री राहुल कुमावत पुत्र स्व. श्री बाबूलाल छापोला, झोटवाड़ा, जयपुर
6 सितम्बर श्री गौरी शंकर कुमावत, पुत्र स्व. श्री बिहारी लाल तांगड़ा, शास्त्रीनगर, जयपुर
7 सितम्बर श्री दौलत राम कुमावत पुत्र स्व. श्री नानगराम भौरोदिया, डेर के बालाजी, जयपुर
7 सितम्बर अभिनव राज बबेरीवाल, सांगानेर, जयपुर
7 सितम्बर श्रीमती जमना देवी धर्मपत्नी श्री राम जी जूनवाल, कुम्हारिया बास, जयपुर
8 सितम्बर श्रीमती शकुन्तला देवी पत्नी श्री शम्भु कुलचानिया, देवी नगर, जयपुर
10 सितम्बर श्रीमती सम्पत्ति देवी धर्म पत्नी श्री भगवान सहाय नोखवाल, जयपुर
10 सितम्बर श्री घीसाराम जी कुमावत कागरवाल, जयपुर
12 सितम्बर श्री नाथूलाल कुमावत पुत्र स्व. श्री हरिनारायण नोखवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
12 सितम्बर श्री नाथूलाल कुमावत घोड़ेला, जयपुर
13 सितम्बर श्री जगदीश कुमावत पुत्र स्व. श्री खेमचंद सिरोहिया, सांगानेर जयपुर
15 सितम्बर श्री नाथूलाल माननीया लवाण,
15 सितम्बर श्री नच्छीलाल गोठवाल, डिग्गी रोड, जयपुर
19 सितम्बर श्री मदन लाल कुमावत से.नि. लोको पायलट, पूनाना, जयपुर
19 सितम्बर श्री पवन कुमार कुमावत पुत्र स्व. श्री प्रेम चंद गैदर, ठेकेदार, टोंक फाटक, जयपुर
19 सितम्बर श्रीमती शांति देवी पत्नी स्व. श्री गुरदयाल घोड़ेला, लालकोठी स्कीम, जयपुर

Created by Universal Document Converter

विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची

युवक

नाम	शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				संपर्क सूत्र	स्थान
					स्वयं	माता	दादी	नानी	मो. नंबर	
किशन	BCA	Pvt. Service	8.5.95	5'8''	देवतवाल	सिरोहिया	कारगवाल	जालवाल	9887247974	जयपुर
अनिकेत	M.Com.	Pvt. Service	24.8.91	5'4''	बहिरे	कामे	–	अनावड़े	842208800	मुम्बई
मोहित	B.E.	Pvt. Service	23.6.97	5'8''	कुदाल	जलांधरा	तूंदवाल	सिरसवा	9826247709	इन्दौर
जयप्रकाश	MA, ITI	Pvt. Service	13.5.94	5'5''	राजोरा	राहोरिया	मारोठिया	बेड़वाल	8740090793	फुलेरा
अनिरुद्ध	B.E.	Mech. Engi.	13.11.96	5'8''	मारोठिया	सिरोहिया	कुण्डलवाल	लाम्बा	9828103125	जयपुर
संजय	BA	Supervisor Pvt.Ltd.	22.10.98	5'9''	कालूगरिया	तूनवाल	कारगवाल	बबेरवाल	9950655765	जयपुर
सागरमल	B.Com.	Contractor	12.8.96	5'7''	ब्याड़वाल	जलिन्द्रा	सिरस्वा	धेडिया	9829009115	जयपुर
निखिल	M.Tech. (CS)	AL/ML Engi./@payU	6.10.97	5'9''	मारोठिया	गैंदर	सिरस्वा	अनावड़िया	9314529497	जयपुर
दीपक	B.C.A.	Pvt. Service	15.7.98	5'8''	धुंधारिया	मोरवाल	कारगवाल	दम्बीवाल	9829451826	सांभरलेक
योगेश	M.Com.	Parcel Agency	30.6.96	5'7''	देवतवाल	मामोडिया	बालोदिया	अनावड़िया	8058801772	जयपुर
रोहित	B. Tech. (CS)	Pvt. Service	17.9.96	5'9'	कुसुम्बीवाल	केलूगरिया	सिहोटा	माचीवाल	9829099310	जयपुर
राहुल	M.Sc., B.Ed.	Pvt. School	2.8.99	-	घासोलिया	घोड़ेला	तूंदवाल	मारवाल	9871243392	नीमराना
दीपक(कलाकुशल)	B.A.,	Computor Supervisor	10.4.84	-	कारगवाल	जलान्दरा	बालोदिया	बबेरीवाल	7742989827	जयपुर
मोहित	M.Com., LLB	Ligal Officer (AU Bank)	22.3.97	5'5''	अनावड़िया	मारवाल	खोरानिया	सिरोहिया	9314023817	जयपुर
हेमंत	B.Sc.	Pvt. Service	10.9.98	5'7''	सिरस्वा	मारवाल	खडखटा	बालोदिया	9119153268	जयपुर
भानुप्रताप	B.A, BPEd.	Pvt. Coach Football	2.12.98	5'8''	बबेरीवाल	सिरोहिया	बड़ीवाल	मारवाल	9001143555	जयपुर
सुनील	B.E. (Chem.)	Product Manager	29.9.94	5'6''	देवतवाल	जलान्दरा	आईथान	आसीवाल	9920236215	जयपुर
राहुल(मांगलिक)	B.Tech.	Pvt. Job	01.12.96	5'6''	मोटावत	टांक	गोठवाल	चांदोरा	9461140233	ब्यावर
सुभाष	M.A.	Pvt. Job	12.7.95	5'8''	मारवाल	बारोदिया	दम्बीवाल	जालंधरा	9998960010	दांतारामगढ़
डॉ. वैभव	PG Ortho.	Doctor	28.5.96	5'7''	जायलवाल	किरोड़ीवाल	केलुगुरिया	घोड़ेला	9413395535	जयपुर
राहुल	B. Tech.	Software Engi.	14.7.2000	5'7''	जायलवाल	धमुनिया	केलुगुरिया	किरोड़ीवाल	9414631395	जयपुर
मोहित	M.Com.,LLB	Private Collage	22.3.97	5'5''	अनावड़िया	मारवाल	खोवाल	सिरोहिया	9314023187	जयपुर

युवतियाँ

नाम	शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				संपर्क सूत्र	स्थान
					स्वयं	माता	दादी	नानी	मो. नंबर	
बसंती	B.A.	-	12.8.98	5'5''	कांकर	ऊँटवाल	बातरा	माचीवाल	9251004853	सांगानेर
कृष्णा	MA	Pvt. Ser.	3.3.96	5'6''	दोराया	गैंदर	जाजपुरिया	सिंदड़	9549629003	चित्तौड़गढ़
नीतू	M.A, B.Ed.	--	5.2.94	5'5''	जेठीवाल	भाओवाल	रतिवाल	घोड़ेला	9461669401	जयपुर
अक्षिता	MCA (Final year)	Pvt. job	16.1.2003	5'4''	लोरवाड़िया	जलान्दरा	मारोठिया	मारवाल	9351443717	अलवर
आरती	Dipl. Medical	Dr. Goyal's path lab.	22.7.99	-	मारवाल	बालोदिया	कुदाल	किरोड़ीवाल	9672516928	जयपुर
खुशबू(मांगलिक)	M.Com.	--	31.12.97	5'2''	नागा	मालिया	किरोड़ीवाल	पारमवाल	7014916534	जयपुर
गरिमा	B.Com.	--	25.5.91	5'1''	दौराया	जलांधरा	राहोरिया	अजमेरा	9616111628	जयपुर
प्रियंका	B.Tech.	Pvt. Job	13.5.92	5'3''	अनावड़िया	कुसुम्बीवाल	होदकास्या	मारवाल	8955738488	जयपुर
भूमिका	Dip. Tex. Design.	Own Business	28.12.99	5'2''	मारवाल	बालोदिया	केलूगरिया	मारोठिया	9252028370	जयपुर
ज्योति	P.G., B.Ed.	--	10.10.97	5'5''	दम्बीवाल	खूंखवाल	बारवाल	मोरवाल	9829058204	चौमूं
पूनम	B.A.	--	25.10.95	5'2''	घोड़ेला	निम्बीवाल	गुरीया	जलान्दरा	7597524033	किशनगढ़
श्रृष्टी	MMA	Pvt. Job	21.10.99	5'1''	मारवाल	जलान्दरा	कुदीवाल	करोड़ीवाल	9829059853	जयपुर
निशा	M.Com.	Preparation (RAS)	25.10.98	-	जलान्दरा	मालिया	अनावड़िया	मारवाल	8107181030	जयपुर
सीमा	B.A.	--	15.9.94	5'4''	जलान्दरा	सारड़ीवाल	कारगवाल	मामोडिया	9414043651	जयपुर
नीरू	M.A.	--	15.11.2000	5'3''	बगराणिया	किरोड़ीवाल	कारगवाल	नानवाल	916606671	चिरावा
सरोज	12th	--	3.10.99	5'10''	सिरस्वा	किरोड़ीवाल	लावण्डीवाल	घोड़ेला	9823415377	किशनगढ़
अंजली	M.A.	--	19.1.93	5'3''	जलान्दरा	खोवाल	घोड़ेला	कुदाल	9460722773	फुलेरा
शैफाली	MBA	--	23.10.95	5'4''	घोड़ेला	कुण्डलवाल	मारवाल	दम्बीवाल	8769633333	पाली
नन्दिनी	M.A.	--	14.6.2000	5'8''	किरोड़ीवाल	जेठीवाल	देवतवाल	काम्या	9414314380	फुलेरा

नोट : 1. यदि आप अपनों की वैवाहिक जानकारी नि:शुल्क प्रकाशित कराना चाहते हैं तो उक्त कॉलम के अनुसार कार्यालय को जानकारी प्रेषित करें।

2. प्रदत्त सूचना के आधार पर यदि आपके किसी अपने का सम्बन्ध हो जाये तो कृपया 'कुमावत इंडिया' पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।

3. उपरोक्त वैवाहिक बायोडाटा की जानकारी व्यक्तिगत, विभिन्न वैवाहिक ग्रुप एवं मीडिया के द्वारा प्राप्त हुई है।

Created by Universal Document Converter

पोस्टकार्ड से भी कम कीमत पर आपका संदेश, विज्ञापन समस्त भारत में पहुँचाने का एकमात्र सशक्त माध्यम "कुमावत इंडिया पत्रिका"

'कुमावत इंडिया' पत्रिका नहीं मिले तो क्या करें

'कुमावत इंडिया' पत्रिका प्रति माह 25 तारीख तक सदस्यों को डाक से भेजी जाती है। यदि 'कुमावत इंडिया' पत्रिका माह के अंत तक आपको नहीं मिले तो कृपया अपने क्षेत्र के पोस्टमैन अथवा पोस्ट मास्टर से इसकी शिकायत करें तथा हमें सूचित करें जिससे आपको सम्बन्धित अंक की प्रति पुन: भेजी जा सके। यदि शिकायत पर कोई कार्यवाही न हो तो कृपया इसकी सूचना 'कुमावत इंडिया' पत्रिका कार्यालय को दें या व्हाट्सएप नं. 9414554322 पर अपना नाम, पता मय पिनकोड लिखकर मैसेज करें। जिससे पत्रिका स्तर से भी सम्बन्धित पोस्ट ऑफिस को शिकायत भेजी जा सके।

सूचना

आदरणीय समाजजनों से निवेदन है कि 'कुमावत इंडिया' पत्रिका में प्रकाशन हेतु सामाजिक गतिविधियों के समाचार, समाज प्रतिभाओं का विवरण व लेख आदि की जानकारी पत्रिका कार्यालय या व्हाट्सएप नं. 9414554322 या e-mailÑkumawatindiapatrika@gmail.com पर भिजवाने का कष्ट करें। सम्पादक मण्डल इन पर विचार करके इन्हें प्रकाशित कराने की कार्यवाही करेगा। आपसे निवेदन है कि प्रकाशनार्थ सामग्री मूल हो तथा पूर्व में कहीं प्रकाशित नहीं हुई हो।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के तथ्य, आंकड़े व विचार लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं तथा इसकी मौलिकता व सत्यता के लिए सम्पादक मण्डल, पत्रिका, प्रकाशक एवं ट्रस्ट विधिक रूप से उत्तरदायी नहीं है।

■ किसी भी लेखन सामग्री या उसके किसी भाग के लिए प्रकाशन से 2 माह बाद कोई आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी।

समस्त विवादों के लिए न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।

सदस्यता समाप्ति सूचना

सदस्यता संख्या 5/1 से 5/86 तक के पांच वर्षीय सदस्यों को सूचित किया जाता है कि उसकी सदस्यता समाप्त हो गई। कृपया शीघ्र नवीनीकरण करावें।

सामाजिक संस्थाओं व ट्रस्टों को विज्ञापन में 10 प्रतिशत की छूट।

पूर्वजों की याद को संजोये रखे

'कुमावत इण्डिया' पत्रिका ने यह सुविधा दी है, समाज बन्धु अपने पूर्वज (माता-पिता, दादा-दादीजी, नाना-नानी आदि) की पुण्य तिथि 1/8 पेज में मल्टीकलर में फोटो सहित, शुल्क 500 रुपए एक बारीय अथवा 4000 रु. जमा कराकर 10 वर्ष तक प्रकाशित करा सकते हैं। - सचिव

पता बदलने तथा पत्रिका नहीं मिलने पर मो. 9414554322 पर नया पता पिन कोड सहित व्हाट्सएप करें।

-: विशेष निवेदन :-

1. **शोक समाचार, तीये की बैठक के समाचारों में नाम के साथ 'कुमावत' अवश्य लगाएं। क्योंकि समान गोत्र अन्य समाजों में भी मिलते हैं।**
2. **इस पत्रिका में हाल ही में दिवंगत हुए समाजजनों की श्रद्धांजलि एक लाईन में नि:शुल्क प्रकाशित की जाती है। इस हेतु पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।**

'कुमावत इंडिया' पत्रिका नहीं मिलने पर यहां सम्पर्क करें

डाक विभाग एवं अन्य के कारणों से आपको पत्रिका नहीं मिलती है तो कृपया अपने नजदीक सेन्टर पर जाकर प्राप्त करने का कष्ट करें तथा कृपया पत्रिका कार्यालय को पत्र, पोस्ट कार्ड आदि द्वारा सूचित करने का कष्ट करें।

जयपुर :

1. **लालकोठी बापूनगर**-श्री सुरेन्द्र नागा, सिवाड़ एरिया, बापूनगर, मो. 9414994006
2. **शिल्प कॉलोनी, झोटवाड़ा**- श्री महेश जलान्धरा मो. 9509344684
3. **कुमावत कॉलोनी, झोटवाड़ा**- श्री सुरेन्द्र मारोठिया मो. 9314820385
4. **जयपुर शहर**-श्री राजसिंह बधानियां, म.नं. 454, मिश्र राजाजी का रास्ता, मो. 9414238799
5. **सांगानेर**-श्री भीमसिंह सिरोहिया, मालपुरा गेट मो. 9414359364
6. **मालवीय नगर**-श्री लक्ष्मीनारायण घोड़ीवाल, 7/218, मालवीय नगर, जयपुर मो. 9549656438
7. **22 गोदाम**-श्री चेतन बालोदिया, राज ब्लॉक, बी-81, रोड नं. 4 मो. 9414052736
8. **आदर्श नगर, तिलक नगर**-श्री शैलेन्द्र खड़गटा, खड़गटा भवन, मोती डूंगरी, जयपुर मो. 9351682036
9. **दहमी कलां, बगरू**-श्री चेनसुख बड़ीवाल, ग्लोबल एकाउन्ट सर्विस दहमी कलां बालाजी स्टेण्ड मो. 9929012987
10. **करधनी-कालवाड़ रोड**-श्री गणेश राम मारवाल, मै. जयश्री राम हार्डवेयर एण्ड पावर टूल्स टिम्बर दुकान नं. 90-91, करधनी शॉपिंग सेन्टर 9 दुकान कालवाड रोड, मो. 9828063267
11. **टोंक फाटक**- गणपति आर्ट एण्ड फ्रेम, 26 आदर्श बस्ती, मो. 8058157147
12. **ब्यावर**-श्री नरेन्द्र आर्य, मो. 8107944493
13. **दिल्ली**-श्री राधेश्याम घासोलिया, मो. 9818711580
14. **फुलेरा**-श्री सुरेश नागा, जगदम्बा प्रिंटिंग प्रेस, बस स्टेण्ड के पास
15. **सोडाला** -घनश्याम फोटो लेमिनेशन एण्ड फ्रेमिंग, 31, कुमावत कॉलोनी, मो.9352070394

Created by Universal Document Converter

जयपुर नगर निगम चुनाव में कुमावत समाज के विजयी प्रत्याशियों को हार्दिक बधाई



वार्ड नं. 1 - श्री मोहनलाल जी कुमावत (निर्दलीय) - 572 मतों से विजयी



वार्ड नं. 35 - श्री अमरचंद कुमावत (निर्दलीय) - 1461 मतों से विजयी



वार्ड नं. 83 - श्री चंद्र प्रकाश कुमावत (कांग्रेस) - 174 मतों से विजयी

बधाई

8 सितम्बर-2026

कली मुस्कराई-आंगन महका

हि रां शी



प्रि यु

शुभेच्छू

लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल-राजकुमारी (दादाजी-दादी जी), तारा चन्द मारवाल-संतोष (नानाजी-नानीजी), सुरेन्द्र बाबू-प्रीति (ताऊजी-ताईजी), मनीष-शशि (पिताजी-माताजी), सारिका-भवानी सिंह कुसुम्भीवाल (बुआजी-फूफाजी), रजत, उचित, शुभी (चारू), शिवि (निक्की), लविन (पीकू) (भाई-बहिन)

7/218, मालवीय नगर, जयपुर-17 मो. 9549656438



नवरात्रा की हार्दिक शुभकामनाएं

केवल महिलाओं के लिए

Hardik
beauty salon

23 सालों से कार्यरत

विशेषज्ञ : मेकअप, कराटिन, स्मूथनिंग, हेयर हाइलाइट्स, हेयर स्पा, बॉडी मसाज, थ्रेड, वैक्स , फेशियल और भी अन्य सेवाएं ब्रांडेड प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल करते हुए इकोनॉमिक रेट्स पर उपलब्ध हैं।

संपर्क : 93515-76710

64, ग्रेटर कैलाश कॉलोनी, एपेक्स मॉल के पीछे, लालकोठी, टोंक रोड, जयपुर



Rakesh Sirohiya



नवरात्रा की
हार्दिक शुभकामनाएं

Harinarayan Premraj

Manufacturers & Suppliers

**Sandal Wood, Rose Wood, Abony & Plain Wood Articals,
Silk, Paper, Gem Stone, Marble Painting, Agarbatti etc.**



**Near Hotel Rajputana Palace Shereton, Digamber Jain Temple,
Railway Station, Jaipur-302006 (INDIA)
Ph.: 0141-2374530 | Mob.: +91 9829405503
Email : harinarayanpremraj@gmail.com**

Director
Mukesh Kumawat
93146-07695

Managing Director
C.M. Kumawat
98290-56063

Director
Lokesh Kumawat
97837-83123

CMT ARTS INDIA PVT LTD.

MANUFACTURER, EXPORTER, IMPORTER & WHOLESALER OF
All kind of : HANDICRAFT, GIFT AND SOUVENIR

Since 1976



Speciality :
1. Cedar Wood/ Kadamba wood with fine carving and half antique.
2. Sandalwood artifacts 3. Brass metal with turquoise work and Antique finish
4. Marble with painted & embossed art 5. Cultured marble 6. Soft stone 7. Miniature Art

Showroom :
"Sai-Villa", Plot No. 39, Mission Compound,
C-Scheme, Near Ajmer Puliya (Bridge)
Jaipur 302 001 (Raj.) Tel: +91-141-4041561

Residence :
F-31/A, Lal Bhadhur Nagar (W),
S.L. Marg, Main Road, Durgapura,
Tonk Road, Jaipur - 302018 (Raj.)

Email: cmtartsindia@gmail.com

Website : www.sandalwood.cn.com

रजि. सं. 2005/175

मास्टर भौंरीलाल वर्मा चेरिटेबल ट्रस्ट

नवल निकुंज, 30, पंचवटी जेडीए कॉलोनी, गुर्जर की थड़ी, जयपुर



स्व. मास्टर भौंरीलाल वर्मा (देवतवाल)

(14 सितम्बर, 1914-24 सितम्बर 1983)

ट्रस्ट की प्रमुख गतिविधियां

(1) प्रतिवर्ष छात्र-छात्राओं के प्रोत्साहन हेतु विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित करना।

(2) आर्थिक दृष्टि से कमजोर एवं मेधावी छात्र-छात्राओं को अग्रिम अध्ययन हेतु छात्रवृत्ति प्रदान करना।

(3) श्रीमती लक्ष्मी स्मृति पुस्तकालय के माध्यम से छात्र-छात्राओं को पुस्तकीय सहायता करना।

(4) स्व. मास्टर जी की जयन्ती 14 सितम्बर को स्मृति व्याख्यान आयोजित करना एवं समारोह की विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता छात्र-छात्राओं को पुरस्कार प्रदान करना एवं छात्रवृत्ति वितरण करना।

(5) समाज सेवा एवं शैक्षणिक उन्नयन हेतु अन्य कार्यक्रमों का आयोजन।

चिरस्मरणीय समाज सेवी, बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी एवं कुमावत समाज के अग्र पुरूष स्व. श्री भौंरीलाल वर्मा (मास्टरजी) की स्मृति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए उनकी 112वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में 34वां मास्टर भौंरीलाल वर्मा स्मृति व्याख्यान एवं प्रतिभा सम्मान समारोह रविवार, दिनांक 20 सितम्बर, 2026 को मालवीय नगर स्थित कुमावत क्षत्रिय समाज भवन में आयोजित किया गया। समारोह में प्रो. एस. एल. कुमावत, पूर्व प्राचार्य राजकीय पी.जी. महाविद्यालय, कोटा ने 'बाल विकास एवं शैक्षणिक जागरूकता' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री हरि प्रसाद शर्मा, सेवानिवृत आई.जी. (पुलिस) एवं पूर्व अध्यक्ष कर्मचारी चयन बोर्ड एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. अनूप कुमावत, विभागाध्यक्ष लेखाशास्त्र एवं व्यावसायिक सांख्यिकी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने की। उक्त समारोह में समाज के विद्यार्थी जिन्होंने इस वर्ष राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर राजस्थान की दसवीं अथवा सीनियर सैकण्डरी परीक्षा में अथवा आईसीएसई/सीबीएससी की दसवीं अथवा सीनियर सैकण्डरी परीक्षा में न्यूनतम 90 प्रतिशत अथवा उससे अधिक अंक प्राप्त किये हो, ऐसे 21 मेधावी विद्यार्थियों को प्रोत्साहन राशि प्रदान की गई। साथ ही समारोह में श्रीमती प्रियंका देवतवाल को पी.एच.डी. उपाधि प्राप्त करने पर प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।



किशोर कुमार देवतवाल
संरक्षक
मो.: 7877095052



रामजीलाल तोंदवाल
अध्यक्ष
मो.: 9828130256



रामचन्द्र वर्मा
उपाध्यक्ष
मो.: 9672750188



धीरज वर्मा
कोषाध्यक्ष
मो.: 9929442200



रविकान्त वर्मा
मंत्री
मो.: 9983314170

SP CONSTRUCTION

Building INDIA'S Construction









SHASHI PAL KUMAWAT



B-34, Devi Chiranjivi Colony, Surya Nagar, Gopal Pura Bye Pass, Jaipur 302015

Web: spconst.co.in E-Mail: info@spconst.co.in



Vijay Anand
International Academy

**Vill. AkedaChoud, Via-Jahota. Tah. Rampura Dabri,
Distt. Jaipur (Raj) - 303701 Call 9460852525**

Special Features

1. 100% Result
2. Centrally Air Cooled School
3. Vehicle Facility
4. Smart Classrooms
5. Highly Educated Teachers
6. International Level Syllabus
7. Worldwide Education Approaches at Home
8. Computer Coding and Programming
9. Separate Labs for Primary, Middle and Higher Classes

Nursery to X
(English Medium)

Your child deserve the Best Education

CCTV SURVEILLANCE 24X7



Director
Deendayal Kumawat



Co-ordinator
Monika Kumawat
(M.Com., B.Ed.)



Principal
Anita Chejara
(M.A., B.Ed.)

RNI - RAJHIN/2017/74285

प्रेषक: कुमावत इंडिया पत्रिका
एफ 31/ए, एस. एल. मार्ग,
लाल बहा